हँसती दुनिया



मई 1998


WEDDING SAREES, SUIT-DUPATTA & LENGHA CHUNNI FOR ALL OCCASIONS
CSE
CHHABRA®
Saree Emporium
MANUFACTURERS & WHOLESALE
DEALERS OF HIGH FASHION SAREES
488-489 KATRA ASHRAFI, CHANDNI CHOWK,
DELHI-110006
PHONES : SHOP : 3262011, 3273971
RESI. : 6413052 FACTORY : 89-20305
SISTER CONCERN
CHHABRA SAREE MANDIR®
FACTORY :
AMRRITA TEXTILE INDUSTRIES, NOIDA
WE HAVE NO OTHER BRANCH IN DELHI
BEWARE OF SIMILAR NAMES & BROKERS.

वर्ष 25
अंक 5

हँसती दुनिया

(बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका)

मई
1998

कहानियां

कविताएं

लेख

स्तम्भ

चित्रकथाएं

प्रकाशक एवं मुद्रक श्री निर्मल जोशी ने सन्त निरंकारी मण्डल, सन्त निरंकारी कालोनी, दिल्ली-9 के लिये, हरदेव प्रिण्टर्ज निरंकारी कालोनी, दिल्ली-9 में मुद्रित करवाया।

कार्यालय फोन : 7430181

सम्पादक (अवैतनिक) — **विनय जोशी**
सहायक सम्पादक — **विमलेश आहूजा**
कला निर्देशक — **दीपक बग्गा**

वार्षिक चन्दा : 30/- रु. इंग्लेण्ड £7, अमेरिका $12 कनाडा $15
जीवन-पर्यन्त : 300/- रु. इंग्लेण्ड £100, अमेरिका $150 $200
एक प्रति : 4/- रु

सबसे पहले

एक गाँव था एकमपुर। वहाँ सभी लोग एक ही प्रकार के थे। एक ही वेष-भूषा, एक-सा खाना-पीना, वर्ष में दो-चार एक-से त्यौहार। मजे की बात तो यह थी कि उस पूरे गाँव में बस दो या तीन प्रकार की फसलें ही उगाई जाती थीं। शेष बहुत सी फसलों के लिए उन्हें दूसरे गाँव पर निर्भर रहना होता था।

एक बार एकमपुर गाँव का एक व्यक्ति नन्दू मनोरम गाँव की ओर गया। वहाँ एक सप्ताह बाद एक त्यौहार मनाया जाना था। नन्दू गाँव में घूमते हुए हैरान हो रहा था कि कहीं रंग-बिरंगी धोती व लहँगा पहने स्त्री-पुरुष गाँव को सजाने का कार्य कर रहे थे तो कहीं पायजामाकुर्ता पहने लोग पकवान बना रहे थे। कहीं पृथ्वी पर बंगाली किस्म के 'अल्पना' सजाये जा रहे थे तो कहीं मद्रासी किस्म की घण्टियों व धागे से पिरोये गये आकर्षक पर्दे।

निश्चित दिन को एक खुले मैदान में रंग-बिरंगी, भिन्न-भिन्न किस्म की पोषाकें पहने स्त्री-पुरुष आने लगे। वे सभी एक ही स्थान के नहीं दिख रहे थे। फिर उन्होंने मिलकर गाँव के मुखिया व पंचायत को सादर प्रणाम किया व बारी-बारी से अपनी-अपनी भाषा में कई कार्यक्रम किये। पूरा गाँव झूम रहा था। अन्त में बहुत से व्यंजनों से भरपूर भोजन भी पूरे गाँववासियों ने मिलकर ही खाया । वह भोजन नन्दू को बहुत अच्छा लगा। उसने अपने गाँव में सदा एक ही प्रकार का सब कुछ देखा था। उसे लगा—जितनी भिन्नता होगी, उतनी अधिक व्यापकता का आनन्द आयेगा। और उसे लगा इस गाँव के लोगों को दूसरे गाँवों की फसलों पर निर्भर नहीं रहना पड़ता। फिर ये सब एक दूसरे को कितने आदर से देखते हैं। हर आगन्तुक का खुले मन से स्वागत भी करते हैं।

नन्दू ने अपने गाँव में जाकर ये सब बताया—हमें खुले दिमाग से सभी कुछ अपनाना चाहिये; अधिक से अधिक रहन-सहन को सामूहिक रूप में अपनाना चाहिये। इससे मन में ऊब नहीं आती और अपना विकास होता है।

प्यारे साथियो! सत्य भी यही है। इसे व्यवहार में उतारने का प्रयास हमें करते रहना होगा।

अब तुम्हारी छुट्टियाँ भी प्रारम्भ हो गई हैं। अपने प्रदेश और देश में घूमों तथा अपनी संस्कृति और देश के बारे में जानकारी बढ़ाओ। तुम्हें बहुत आनन्द आयेगा। स्वयं जाकर स्थान को देखने से ज्ञान परिपक्व व सच्चा होता है।

❑ **विनय जोशी**

लोककथा : कमला गर्ग

परिश्रम का महत्व



प्राचीनकाल की बात है। संस्कृत के एक प्रकांड विद्वान थे। देश-देशान्तर से विद्यार्थी उनके यहाँ पढ़ने आते थे। जो उनकी पाठशाला में अध्ययन करते वे ज्ञानी बन जाते थे। इसका कारण यह था कि वे बड़ी तन्मयता से पढ़ाते थे। एवं सबका बहुत ध्यान रखते थे। उसी आश्रम में वोपदेव नामक एक छात्र भी रहता था। उसका मन पढ़ाई में नहीं लगता था। जब गुरु जी पढ़ाते तो वह बाहर देखता रहता था, अपने साथी से बात करता। गुरु जी ने उसे कई बार समझाया कि विद्यार्थी जीवन ही जीवन का स्वर्णकाल है। जो इस समय जितना श्रम करता है वह उतना ही महान बनता है। परन्तु वोपदेव की समझ में ये बातें नहीं आती थीं।

एक दिन उसने हिरनी के एक छोटे से बच्चे को छिपा दिया। हिरणी दिन भर बच्चे को ढूँढती रही। आखिर वह बच्चा भूखा-प्यासा एक कुटी में मिला। बात गुरुजी के पास पहुँची। उन्हें बहुत क्रोध आया कि वोपदेव एक तो पढ़ता नहीं है, दूसरे पूरे दिन गलत कार्य करता है। उन्होंने वोपदेव को खूब डाँटा और आश्रम से तुरन्त निकल जाने को कहा।

रास्ते में उसे प्यास लगी। एक कुएं पर कुछ स्त्रियाँ पानी भर रहीं थीं। उन्होंने उसे पानी पिलाया। पानी पीकर वोपदेव ने देखा कि कुएँ की जगत पर गोल-गोल गड्ढे हैं। पूछने पर एक स्त्री ने बताया—भरे हुए घड़े बार-बार रखने से मिट्टी का घिसाव पत्थर पर पड़ता है। इससे पत्थर में गड्ढे पड़ गए हैं।

इस बात से वोपदेव के मन पर बहुत प्रभाव पड़ा।

जब मिट्टी का घड़ा कठोर पत्थर में गड्ढे कर सकता है तो वह भी पढ़कर विद्वान बन सकता है।

सोचते-सोचते वोपदेव आश्रम में वापस आया और गुरु जी के चरणों में गिर पड़ा। बोला—गुरुदेव! मुझ अज्ञानी को क्षमा करिए। आपकी बात न मानकर मैंने बहुत समय नष्ट किया है। अब मैं मन लगाकर पढ़ूँगा। गुरु जी ने प्रसन्न होकर उसे गले लगा लिया।



उसी दिन से वोपदेव ने पढ़ना शुरू कर दिया। थोड़े दिनों में अपने परिश्रम व लगन से वह विद्वान बन गया। उसने संस्कृत व्याकरण की एक पुस्तक लिखी जिसका नाम है मुग्धबोध। इसमें उन्होंने बहुत ही सरल ढंग से संस्कृत भाषा का ज्ञान कराया है।

निरंतर अभ्यास व परिश्रम से सभी कार्य सफल होते हैं। अपने कर्म से, श्रम से व गुण से ही महान बनता है।

कहानी : इंदरमन साहू

लोमड़ी का शिकार कछुआ

पोखर से निकल कर जमीन पर टहलने की उस कछुए की रोज की आदत थी । पास में रहने वाली एक लोमड़ी ललचाई नजरों से उसे देखती थी । अपने भारी भरकम शरीर को घसीटते हुए जब कछुआ चलता तब लोमड़ी का कलेजा मुँह को आ जाता था । लेकिन कछुआ तो कछुआ था उस के नरम-नरम गोस्त की कल्पना कर लोमड़ी के मुँह में पानी आ जाता था । उसने दो बार उस पर हमला भी किया और उसने अपने दो दांत गंवा लिये थे ।

अब तो एक ही उपाय रह गया था । कछुआ किसी तरह पीठ के बल उलट जाए तो उसके पेट को आसानी से फाड़ा जा सकता था । लोमड़ी अवसर की प्रतीक्षा करने लगी ।

एक दिन कछुआ कुछ अधिक ही ताजा लग रहा था । लोमड़ी के धैर्य का बाँध टूट गया और वह उस पर झपट पड़ी । कछुए ने शीघ्रता से अपने सिर पैंर समेट लिए । लोमड़ी ने कछुए को पलटने की बहुत कोशिश की, लेकिन कछुआ टस से मस नहीं हुआ । लोमड़ी गुस्सा कर उसकी पीठ पर बैठ गई और उसके सिर व पैरों के बाहर निकलने का इंतजार करने लगी।

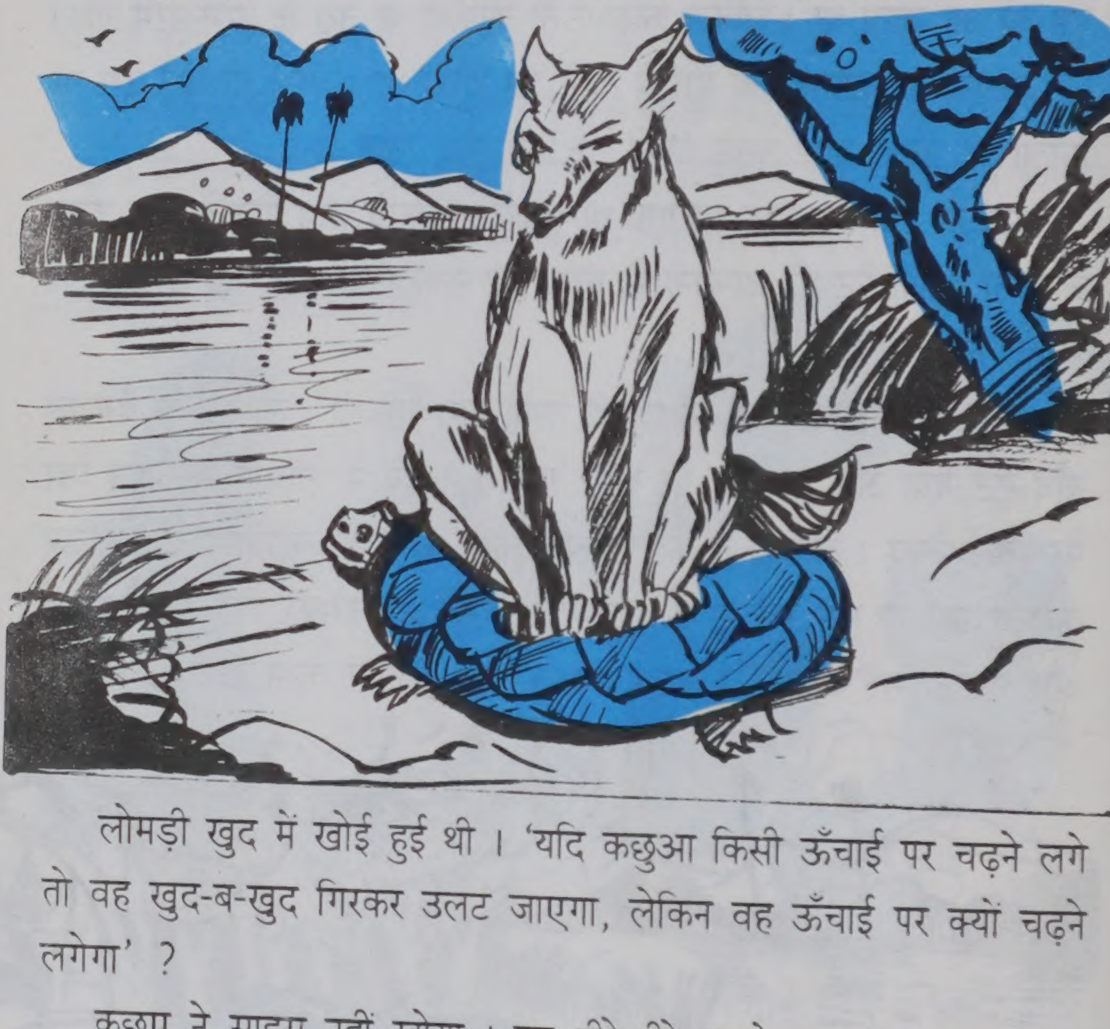


लोमड़ी सोच रही थी—कछुए की पीठ यदि नीचे हो जाए तो इसका पेट ऊपर हो जाएगा । पर इसकी पीठ नीचे होगी किस तरह ?

कछुआ एकाग्रचित्त पड़ा रहा ।

लोमड़ी विचार करने लगी, यदि एक कपड़ा बिछा दिया जाए और कछुआ उस पर चलने लगे तो कपड़े को खींचकर इसे उलटा जा सकता है । पर कपड़ा कहाँ से आए ?

कछुआ बुरा फंसा । लोमड़ी मौत बनकर उसकी पीठ पर सवार थी ।



लोमड़ी खुद में खोई हुई थी । 'यदि कछुआ किसी ऊँचाई पर चढ़ने लगे तो वह खुद-ब-खुद गिरकर उलट जाएगा, लेकिन वह ऊँचाई पर क्यों चढ़ने लगेगा' ?

कछुए ने साहस नहीं खोया । वह धीरे-धीरे चलने लगा ।

लोमड़ी अपनी अलग ही दुनिया में थी, 'किसी बाघ की मदद लेनी चाहिए । उसके एक ही थपेड़े से कछुआ चारों खाने चित्त हो जाएगा । बाघ तो कछुए का पूरा गोश्त ही डकार जाएगा' ।



अब कछुआ पोखर के पानी में तैर रहा था । लोमड़ी बेखबर थी । 'यदि कछुआ पानी में होता तो इसे बड़ी आसानी से उलटा जा सकता था' ।

लोमड़ी कछुए को पानी में देखकर फूली न समाई, कछुए को दबोचने के लिए वह पानी में कूद पड़ी । कछुआ तैरकर दूर भाग गया ।

लोमड़ी पानी में डूबने लगी । तैरने के प्रयास में वह पानी में हाथ-पैर पटकने लगी । वह धीरे-धीरे किनारे लगने लगी । बड़ी मेहनत मशक्कत के बाद आखिर वह किनारे लग पाई । इस बीच उसने ढेर सारा पानी पी लिया था । उसका अच्छा खासा स्नान भी हो गया था ।

लोमड़ी ताजातरीन महसूस करने लगी और पेट भर पानी पीने से उसकी भूख शांत हो गई थी । वह सोचने लगी, कछुए के शिकार के लिए मुझे तैरना आना चाहिए ।

अब लोमड़ी तैरना सीख रही है ।

कहानी की सत्यता जो भी रही हो परन्तु यह सत्य है कि मुसीबत में भी धीरज न खोकर कर्म करते रहने वाले छोटे से जीव की भी जीत हो जाती है । हवाई महल बनाने वाले सदा मुसीबत में पड़ जाते हैं ।

कविता : हनीफा

बेचैनों को चैन मिलेगा





नये ज्योति ले सूरज उग कर ऐसी धूप बहायेगा
कोसों दूर अन्धेरा अपने तन मन का हो जायेगा ॥

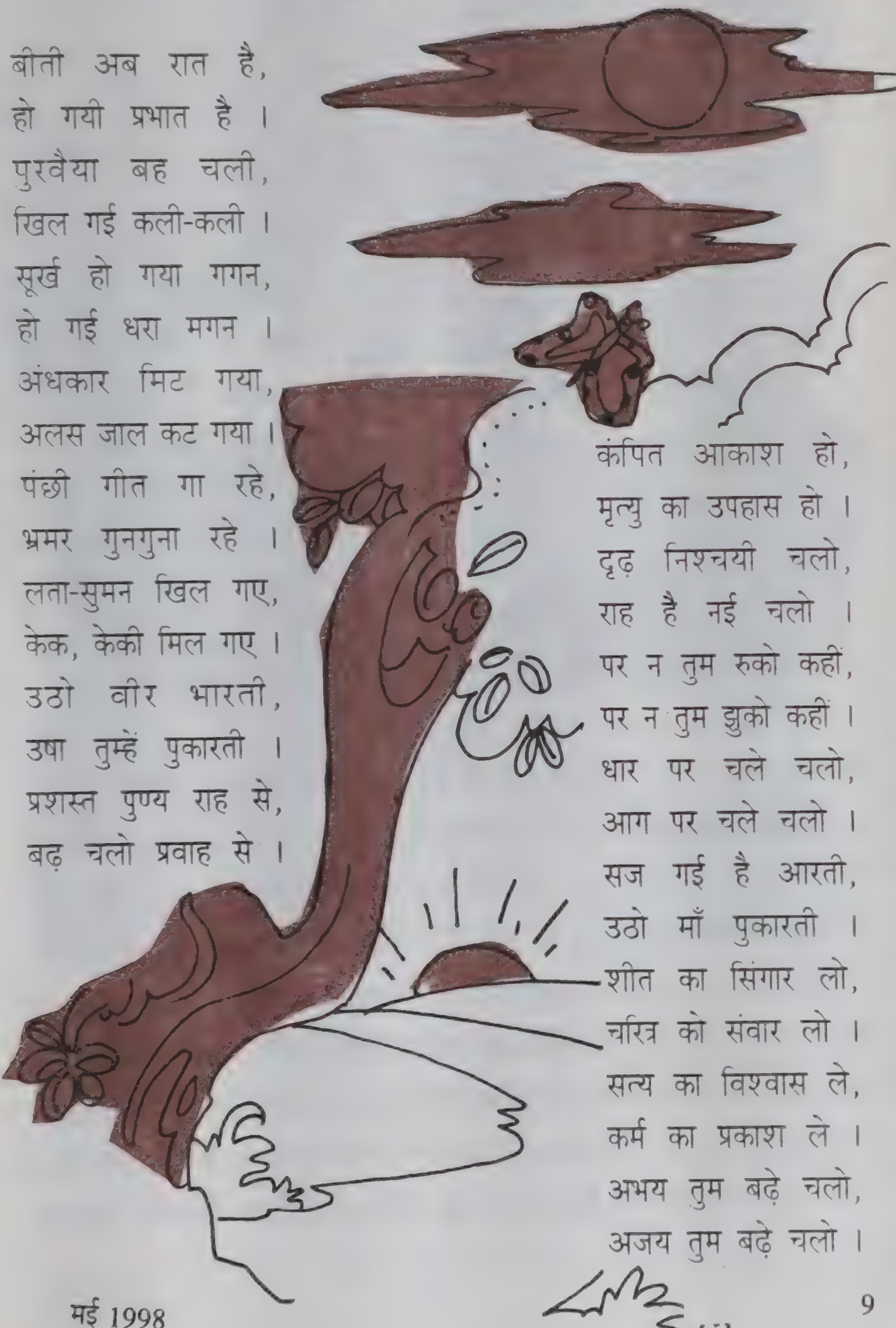
नये साल की खुश्बू से, खिल जायेगा यह देश हमारा।
धुल जायेंगे मन के मैल, जाग उठेगा भाई चारा ।
भस्म अधर्मी हो जायेगा, धर्मी मौज उड़ायेगा ॥

बेचैनों को चैन मिलेगा, बेघर सारे घर पायेंगे ।
खाली आँचल जितने भी हैं, खुशियों से सब भर जायेंगे।
देश का बच्चा-बच्चा हँसकर, गीत खुशी के गायेगा ॥

लह-लायेंगे खेत हमारे, बाग हरे-भरे चमकेंगे ।
सिमट आयेंगे सुख आँचल में, दुःख सब परे-परे खिसकेंगे।
धरती सोना उगलेगी, आकाश लाल बरसायेगा ॥



बढ़े चलो



बीती अब रात है,
हो गयी प्रभात है ।
पुरवैया बह चली,
खिल गई कली-कली ।
सूर्ख हो गया गगन,
हो गई धरा मगन ।
अंधकार मिट गया,
अलस जाल कट गया ।
पंछी गीत गा रहे,
भ्रमर गुनगुना रहे ।
लता-सुमन खिल गए,
केक, केकी मिल गए ।
उठो वीर भारती,
उषा तुम्हें पुकारती ।
प्रशस्त पुण्य राह से,
बढ़ चलो प्रवाह से ।

कंपित आकाश हो,
मृत्यु का उपहास हो ।
दृढ़ निश्चयी चलो,
राह है नई चलो ।
पर न तुम रुको कहीं,
पर न तुम झुको कहीं ।
धार पर चले चलो,
आग पर चले चलो ।
सज गई है आरती,
उठो माँ पुकारती ।
शीत का सिंगार लो,
चरित्र को संवार लो ।
सत्य का विश्वास ले,
कर्म का प्रकाश ले ।
अभय तुम बढ़े चलो,
अजय तुम बढ़े चलो ।

कहानी : रा[illegible] अरोड़ा

लड़की दोषी क्यों?



सेठ जयकिशन कपड़ों का एक बहुत बड़ा व्यापारी था। उसका कपड़ा विदेशों में निर्यात होता था। सेठ की कपड़ों की एक बहुत बड़ी मिल थी, जिसमें सैकड़ों मजदूर काम किया करते थे। सेठ की एक पुत्री थी, जिसका नाम रेखा था। परन्तु सेठ एक बेटा भी चाहता था। तीन वर्ष बाद रेखा को राखी की लाज और बहन की रक्षा के लिए एक प्यारा सा भाई मिल गया। जब सेठ को इस खुशखबरी का पता चला तो वह अंत्यन्त खुश हुआ। उसने एक बहुत बड़ी पार्टी का आयोजन किया। उसमें उसने समस्त शहर को निमन्त्रण भेजा। उसने अपनी मिल में काम करने वाले प्रत्येक कर्मचारी को बोनस दिया । उसने अपने बेटे का नाम राहुल रखा । राहुल के आने पर सेठ और सेठानी का प्यार उसी पर उमड़ आया। अब रेखा का उनके लिए कोई महत्व नहीं रहा। सारे घर के नौकर राहुल को ही प्यार

करने लगे। जब राहुल पाँच वर्ष का था तो उसे स्कूल भेजा गया, परन्तु उसका मन न स्कूल जाने को करता और न ही पढ़ाई को । सेठ उसे प्रतिदिन दस रुपये खर्च के लिए देते जबकि रेखा उससे बड़ी होते हुए भी केवल पाँच रुपये की हकदार थी। सेठ की दृष्टि में केवल लड़के ही प्यार व पैसा पाने के हकदार होते हैं। राहुल पढ़ाई में अत्यन्त कमजोर था इसलिए उसके पिता ने घर में उसकी ट्यूशन रख दी।

समय बीतता गया और राहुल कालेज जाने लगा। वहाँ एक बदमाश लड़के रणबीर से राहुल की मुलाकात हुई जो अक्सर नशा करता था। राहुल और रणबीर कालेज से भागकर सिनेमा देखने जाते। कालेज में प्रैसीडैंट के चुनाव हुए। रणबीर ने राहुल को चुनाव में उम्मीदवार के रूप में नाम लिखवाया। उसने चुनाव जीतने



और अपने प्रचार के लिए पैसा पानी की तरह बहाया परन्तु उसने जीतने के लिए जाली वोट डलवाए परन्तु जाली वोट डालते हुए उसका एक मित्र पकड़ा गया और उसे चुनाव से बेदखल कर दिया गया। रणबीर ने सोचा कि यदि राहुल को नशे की आदत पड़ जाए तो मेरी चाँदी ही चाँदी हो जाएगी। राहुल को चुनाव से बेदखल कर दिया राहुल ने इसे अपना अपमान समझा। रणबीर ने इस अवसर का लाभ उठाया और राहुल को सिगरेट में नशा मिलाकर दिया।



राहुल ने जैसे ही सिगरेट का कश लिया तो उसे लगा मानो वह स्वर्ग का आनंद ले रहा हो। परन्तु उसे क्या पता था कि यह आनंद उसे बर्बादी की ओर ले जाएगा। राहुल ने नशे के साथ-साथ शराब पीना भी शुरू कर दिया। राहुल की बहन रेखा को जब इस बात का पता चला तो उसने यह बात अपने पिता से कही। उसके पिता को सुनकर विश्वास नहीं हुआ।

पिता ने जब राहुल से पूछा तो उसने साफ इंकार कर दिया।

सेठ ने एक दिन राहुल को खर्चने को पैसे नहीं दिये तो राहुल ने अपनी घड़ी रणबीर को बेच दी और नशा करने के लिए दवा ले ली।

जब सेठ ने राहुल के हाथ में घड़ी नहीं देखी तो उन्होंने राहुल से घड़ी के बारे में पूछा। राहुल हक्का-बक्का होने का बहाना करने लगा और कहा कि घड़ी गुम हो गई।

पिता ने कहा—चोरी तो एक न एक दिन पकड़ी ही जाती है।

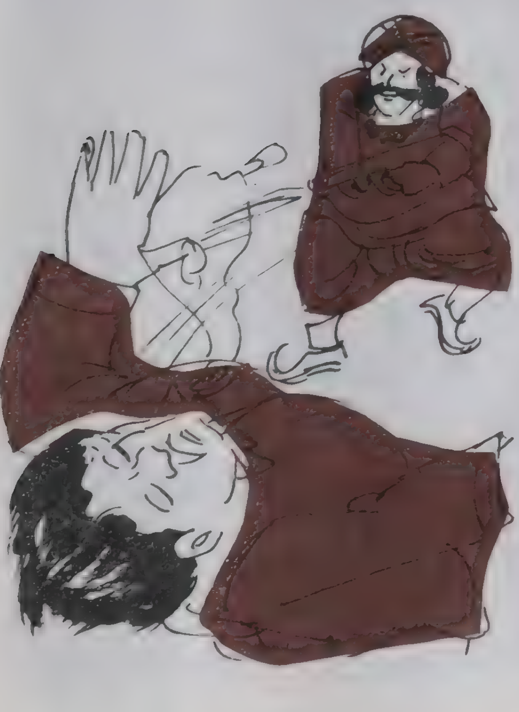
एक दिन सेठ ने वह घड़ी रणबीर के हाथ में देखी और पूछा—तुम्हें यह घड़ी कहाँ से मिली?

रणबीर ने कहा—मुझे यह घड़ी राहुल ने बेची है।

घर आकर सेठ ने राहुल को बहुत डांटा।

राहुल को अपने पिता से पहली बार डांट पड़ी थी। उसने इसे अपना अपमान समझा और अपनी माँ के गहने चोरी किए और घर से भाग गया।

सेठ और सेठानी दोनों परेशान हो गए। उधर राहुल ने सारे गहने बेच दिए और नशा न मिलने पर दिन-रात शराब पीने लगा। धीरे-धीरे रुपये खत्म होने लगे तो वह परेशान हो गया। इधर सेठ ने राहुल की खबर अखबार में छपवाई तब राहुल ने इसे पढ़ा और वापिस घर लौट आया। राहुल को घर में नजरबन्द कर दिया गया। राहुल को शराब और नशा न मिलने पर वह बीमार हो गया। डाक्टर ने उसके एक्स-रे लिए और सेठ को बताया कि इसकी किडनी खराब हो गई है। यदि नया गुर्दा न लगा तो इसका बचना मुश्किल हो जाएगा। सेठ ने अखबार में गुर्दे के लिए विज्ञापन दिया। परन्तु कोई गुर्दा नहीं मिला तब रेखा ने अपना गुर्दा देकर राहुल की जान बचाई। परन्तु नशे ने राहुल का पीछा न छोड़ा। वह फिर से नशा करने लगा। सेठ ने सोचा कि शायद राहुल सुधर गया है परन्तु वह अभी भी अन्धेरे में था।



एक दिन सेठानी कपड़े धो रही थी तो उसने राहुल की कमीज की जेब में से एक पुड़िया देखी। उसने जब यह पुड़िया सेठ को दिखाई तो सेठ ने सेठानी को बताया कि राहुल फिर से नशा करने लगा है। तब सेठ को बहुत गहरा दुःख हुआ। उसने सेठानी को कहा—यदि बेटा पैदा न हो तो दुःख, यदि पैदा हो और मर जाए तो उससे बड़ा दुःख और यदि पैदा होकर बुरा बने तो सबसे बड़ा दुःख होता है।

सेठ की शान-शौकत को न जाने किसकी नज़र लग गई थी कि उसकी कपड़े की मिल में आग लग गई। यह आग उसके लिए श्राप बनी उसका लाखों का नुकसान हुआ। सेठ को जब इसका समाचार मिला तो उसे दिल का दौरा पड़ गया। उसकी बेटी रेखा ने स्थिति को सम्भाला और कारोबार के साथ-साथ पिता की भी सेवा की।

एक दिन इस बात का पर्दाफाश हो गया कि मिल में आग कैसे लगी? वास्तव में मिल में आग लगाने वाला कोई और नहीं उसका अपना प्यार से पला, सोने के झूलों में झूलने वाला और पैसे को पानी की तरह बहाने वाला उसका अपना खून राहुल ही था। राहुल तो यही चाहता था कि उसका पिता जल्दी मरे ताकि पूरी वसीयत का वह स्वयं हकदार बने।

उसके पिता क्रोध में भर गये। अपनी बन्दूक से उन्होंने अपने ही बेटे को गोली मार दी व स्वयं को दोषी बना लिया। अपनी बेटी, जिसके लिए उनके दिल में प्यार, मुहब्बत नहीं था उससे क्षमा माँगी और स्वयं को कानून के हवाले कर दिया। परन्तु अदालत ने हत्या के कारण को समझा और केवल कुछ वर्ष की सजा ही सुनाई सुनाई तथा उस नशे के सौदागर रणबीर को दस हजार रुपए जुर्माना और दस वर्ष की सजा सुनाई। देखते ही देखते सज़ा के वर्ष पलक झपकते ही बीत गये और सेठ-सेठानी अपनी बेटी को बेटे की भाँति प्यार करने लगे। ●

एक मिनट में...

संग्रहकर्ता : आकांक्षा रानी (पुरैनी)

- औसत व्यस्क मनुष्य का हृदय एक मिनट में 72 बार धड़कता है।
- दुनिया की सबसे तेज दौड़ने वाली रेलगाड़ी एक मिनट में 3 कि.मी. दूरी तय करती है। यह टोकियो न्यूटोफाइड़ो लाइन पर चलती है।
- एक अमेरिका जेट ने एक मिनट में 60 कि.मी. उड़ने का रिकार्ड स्थापित किया।
- पृथ्वी अपनी धुरी पर एक मिनट में 271 कि.मी. की दूरी तय करती है।
- एक मिनट में विश्व के तेल कुओं से 3600 टन तेल और खानों से 4000 टन कोयला निकाला जाता है।

बुद्धि का फल

रामगंज में एक धोबी रहता था। उसका नाम था राम आसरे। वह बहुत मेहनती था। स्वभाव से भी बहुत अच्छा था। खेती-बाड़ी उसके पास कोई विशेष नहीं थी। उसका अपना धंधा ही जीवन-यापन का सहारा था। उसी में वह खुश भी था। छोटा-सा परिवार था, दो बच्चे उसकी पत्नी तथा वह स्वयं। जानवर के नाम पर उसके पास दो गधे, एक गाय तथा एक साल भर का उसका बछड़ा था।

एक बार गाय ने दूध देना बन्द कर दिया तो उसे खाली बिठाकर चारा खिलाना मँहगा पड़ रहा था। वैसे भी जब तक उसे गाय दूध देती रही तो उस समय दुहते वक्त प्रायः लात मारती थी। इसलिए वह इस गाय से और भी परेशान था। गाय की खराबी आस-पास के कुछ लोग जानते थे। इसलिए उसके सही दाम भी नहीं लग पा रहा था। फिर भी वह उसे अच्छे दाम में बेचना चाहता था।

राम आसरे बुद्धि का तेज था। कई दिन तक सोचता रहा। लोगों से तरह-तरह के सलाह लेता रहा। फिर उसने युक्ति निकाली। उसने कुछ रसीदें छपवा लीं। फिर लोगों से यह कहा कि एक रसीद मात्र दो रुपये की है। पूर्णिमा को जब गाँव में मेला लगेगा तो इन्हीं रसीदों के माध्यम से एक लाटरी खोली जायेगी। जिसके नाम यह लाटरी खुलेगी वही गाय का मालिक होगा। प्रचार के लिए उसने कई बाजारों में डुग्गी पिटवा दी। इससे यह बात आस-पास के गाँव में भी फैल गयी। जिसने भी सुना! सोचा—यह तो बहुत अच्छा है, चलो टिकट ले लेते हैं। यदि लाटरी खुल गयी तो गाय मिलना ही है नहीं तो दो रूपया ही जायेगा। इतना तो दिन में पान-बीड़ी में निकल जाता है और हुआ ये कि मेला आते-आते एक हजार से अधिक रसीदें कट गयीं।

कार्तिक पूर्णिमा को गाँव में मेला लगा। यह मेला प्रतिवर्ष इस गाँव में इसी तिथि को लगता है। मन्दिर के पास गाय को सजाकर बाँध दिया गया। चार



बजे के लगभग ग्राम प्रधान जी आये। उन्हें ही लाटरी खोलनी थी गाँव के अन्य सम्मानित जन एकत्र हुए और फिर जिसने टिकट ले रखा था परिणाम जानने की उत्सुकता में वे भी धीरे-धीरे इकट्ठा होने लगे।

रसीद की सब पर्चियाँ एक साथ एक डिब्बे में मिलाकर रख दी गयीं। ये पर्चियाँ मूल रसीद की ही एक अंग थीं जो बेचते समय रसीद बुक में ही शेष लगी रहती हैं। ग्राम प्रधान ने उसमें से एक पर्ची निकाली। सरपंच ने उस नम्बर को पढ़ा— नौ सो तीस नम्बर। सभी अपना-अपना नम्बर मिलाने लगे। यह नम्बर पास के गाँव में रहने वाले राम सुख का था। गाय उसे दे दी गयी। बेचारा बहुत गरीब था। शायद वैसे तो खरीद भी न पाता। लोगों ने राम आसरे की बुद्धि की प्रशंसा की। जिसने ऐसी व्यवस्था की, कि स्वयं तो अपनी गाय का अधिक से अधिक पैसा पा गया। और जिसे वह गाय मिली मात्र दो रुपये में मिली। तभी एक बुजुर्ग ने कहा—भइया, इ सब बुद्धि का खेल है। ●

कभी न भूलो

— संग्रहकर्ता : **दौलत राम बैरवा 'प्रीत'** (कानोता, जयपुर)

- व्यस्त मनुष्य को आंसू बहाने के लिए अवकाश नहीं होता।
- ऐहतियात हमेशा इलाज से बेहतर होता है।

— लोकोक्ति

- जिस व्यक्ति के दिल में प्राणियों के प्रति प्रेम नहीं वह परमात्मा का प्रेम नहीं पा सकता है।

— निरंकारी बाबा

- यदि तुम्हारा विश्वास पक्का है तो रास्ते में तुम्हें कोई नहीं डिगा सकता।

— अनातोले

- जीवन का पहला और स्पष्ट लक्षण है विस्तार। यदि तुम जीवित रहना चाहते हो तो तुम्हें फैसला करना होगा कि जिस समय तुम जीवन का विस्तार बन्द कर दोगे उसी क्षण जान लेना कि मृत्यु ने तुम्हें घेर लिया है। विपत्तियाँ तुम्हारे सामने हैं।

— स्वामी विवेकानन्द

- तृष्णा सबसे बड़ी बीमारी है।

— चाणक्य

- डरपोक डगमगाते हैं परन्तु खतरे से प्रायः वही पार होते हैं जो साहस से उनका सामना करते हैं।

— रानी एलिजा बेथ

- कला का एक शत्रु है, जिसका नाम अज्ञान है।

— बेन जानसन

- विपत्तियों को पराजित करना ही जीवन के आनन्द की पराकाष्ठा का अनुभव करना है।

— शोपेनहावर

लेख : मनोज कुमार देवांगन

रिआ



रिआ न उड़ सकने वाला पक्षी है। यह शुतुरमुर्ग से काफी मिलता-जुलता है अतः इसे दक्षिणी अमेरिका का शुतुरमुर्ग भी कहते हैं। रिआ पक्षी ऊँचाई में लगभग 1.5 मीटर का होता है। इसका रंग भूरा, सिर और छाती काली, उदर और जांघ सफेद, और गर्दन पीली होती है। इसके पैर में तीन उंगुलियाँ होती हैं।

रिआ दक्षिणी अमेरिका के मैदानों में 3 से 7 तक के झुंड में मिलते हैं और हिरन तथा गोयेनैको के साथ घूमते भी नजर आते हैं।

शुतुरमुर्ग की भान्ति वनस्पति, फल-फूल, जड़ें, बीज तथा छिपकली इसका मुख्य भोजन है।

नर अपनी तेज आवाज़ से पहचाना जा सकता है। यह एक समय में कई मादाओं को अपनी पत्नी बनाकर रखता है और सभी मादायें एक ही घोसले में 20 से 30 अंडे तक देती हैं। नर अंडों को सेता है।

इसकी निगाह बड़ी तेज होती है। यह अपने दुश्मन को देखते ही चौकन्ना हो जाता है। शिकारियों से मुकाबला भी करता है और दौड़ते समय इसकी एक ठोकर घुड़सवार और घोड़े दोनों को गिरा सकती है।

रिआ उड़ तो नहीं पाते लेकिन वे दौड़ते बहुत तेज है। ■

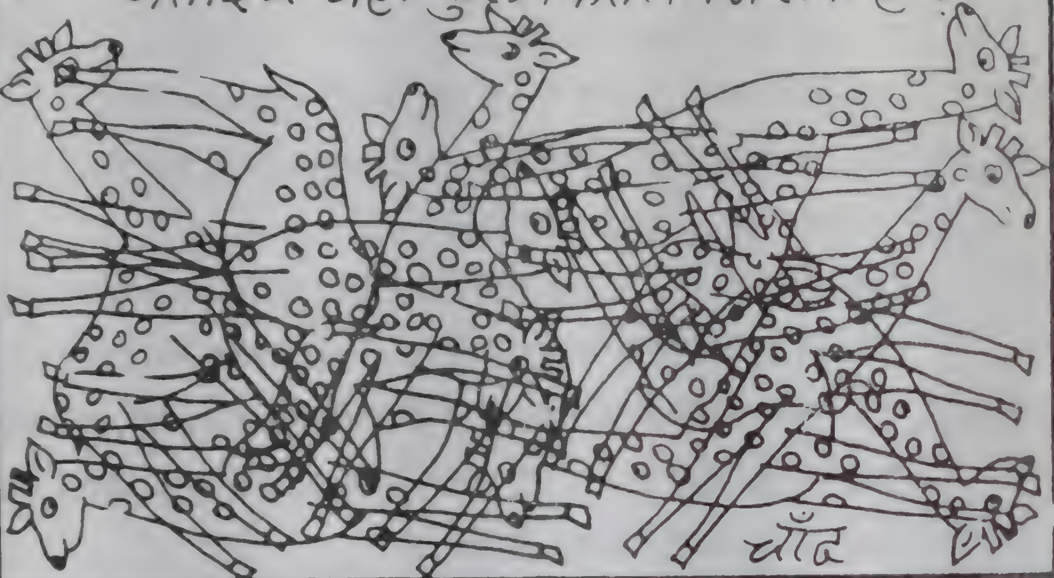
प्रेरक बचपन

प्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी व कवयित्री सरोजनी नायडू मात्र 13 वर्ष की आयु में 1300 पंक्तियों की अंग्रेजी कविता लिखकर सबको आश्चर्यचकित कर दिया था।

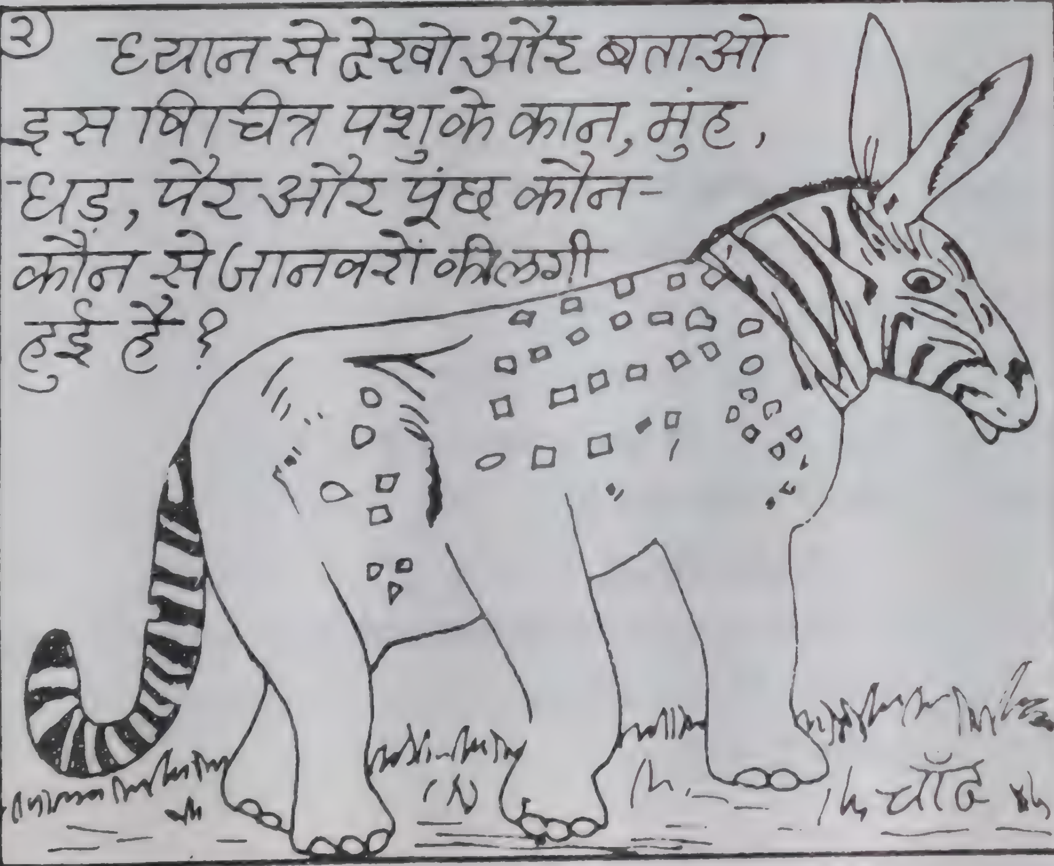
मनोरंजक चित्र पहेलियां

उत्तर इसी अंक में हैं.

1) बताइए यहां कुल कितने जिराफ हैं?



2) ध्यान से देखो और बताओ इस विचित्र पशु के कान, मुंह, धड़, पैर और पूंछ कौन-कौन से जानवरों की लगी हुई हैं?



दादा जी के उत्तर

— अनिल दैलानी (कुरखेड़ा)

प्रश्न : दादा जी, क्या वाकई में मेरा देश महान है, और क्यों?

उत्तर : क्योंकि यह आध्यात्मिक देश है।

— नेहा बतरा 'रज्जू' (दिल्ली)

प्रश्न : जब किसी का मन उलझनों में पड़ जाए तो उसे क्या करना चाहिए?

उत्तर : धीरज रखकर किसी सज्जन पुरुष से सलाह लेनी चाहिए।

— पप्पी खुराना, (सब्जी मंडी, जींद)

प्रश्न : किसी को भगाने के लिए कहा जाता है कि 'नौ दो ग्यारह' हो जाओ। यह क्यों नहीं कहा जाता कि सात चार ग्यारह हो आओ या पाँच छः ग्यारह हो जाओ?

उत्तर : यह एक कहावत है और कहावतों के अर्थ नहीं होते। वह उसी तरह प्रचलित हो जाते हैं वैसे भी शब्दों में नौ दो ग्यारह में सबसे कम शब्द व पूरी लय मिलती है।

— चन्द्रशेखर मेहता 'आजाद'

प्रश्न : दादा जी, क्या आत्मा हमेशा रहती है?

उत्तर : हाँ।

— कंचन अरोड़ा, रजत, साहिल अरोड़ा (कोट ईसा खाँ)

प्रश्न : क्या इन्सान को उसकी मेहनत का फल मिलता है?

उत्तर : अवश्य।

— पुनीत खेड़ा (कलानौर)

प्रश्न : दादाजी, इन्सान और भक्त में क्या अन्तर है?

उत्तर : भक्त ही इन्सान होता है।

— भाषी धमीजा (पानीपत)

प्रश्न : आज की इस स्वार्थी दुनियाँ में हर आदमी सामने वाले को अपनी बातों (बेतुकी) से प्रभावित क्यों करना चाहता है?

उत्तर : स्वार्थसिद्धी के लिए।

— सूरज टहलानी (कुरखेड़ा)

प्रश्न : जीवन में कुछ प्रसंग ऐसे आते हैं जिनमें अपनों को शामिल करने में मन प्रफुल्लित होता है। ऐसे में वह शामिल न हो तो क्या करना चाहिए?

उत्तर : नम्रता से अपना प्रयास फिर प्रारम्भ करना चाहिए।

— शंकर कुकरेजा (दोडाईचा)

प्रश्न : सबसे बड़ा पाप क्या है?

उत्तर : विश्वासघात और कृतघ्नता।

— सीमा माने, लातूर (महा.)

प्रश्न : अगर कोई आदमी छोटी-छोटी बातों पर लड़ता रहता है और उससे सहमत होने के बाद भी वह हमसे लड़ता रहे तो ऐसे आदमी के साथ हमें कैसे रहना चाहिए?

उत्तर : क्षमा और सहनशीलता को अपनाकर।

नीरू शर्मा, शाहदरा (दिल्ली)

प्रश्न : सच्चाई के रास्ते पर चलने वाल्लों को कुछ लोग चिढ़ाते हैं ऐसा क्यों?

उत्तर : अज्ञानता के कारण।

— सन्तोष कुमार (गिदड़बाहा)

प्रश्न : मनुष्य बुद्धिमान कब और क्यों कहलाता है?

उत्तर : जब आत्मचिन्तन करके आत्मदर्शी बन जाए।

— कुशालार्जुन (ब्यावर)

प्रश्न : हम लोग सप्ताह में एक बार आकाशवाणी रेडियो द्वारा पूज्य बाबा जी के मुखारबिंद सुनना चाहते हैं?

उत्तर : बाबा जी प्रवचन आते तो हैं। समय और दिन आकाशवाणी के कार्यक्रम से नोट किया करें।

— ओमसिंह (भीम-उदयपुर)

प्रश्न : इन्सान कब धोखा खाता है?

उत्तर : जब स्वार्थ या अहम के वश में आ जाता है।

प्रश्न : दुनिया में इन्सान का अपना कौन होता है बताएँ?

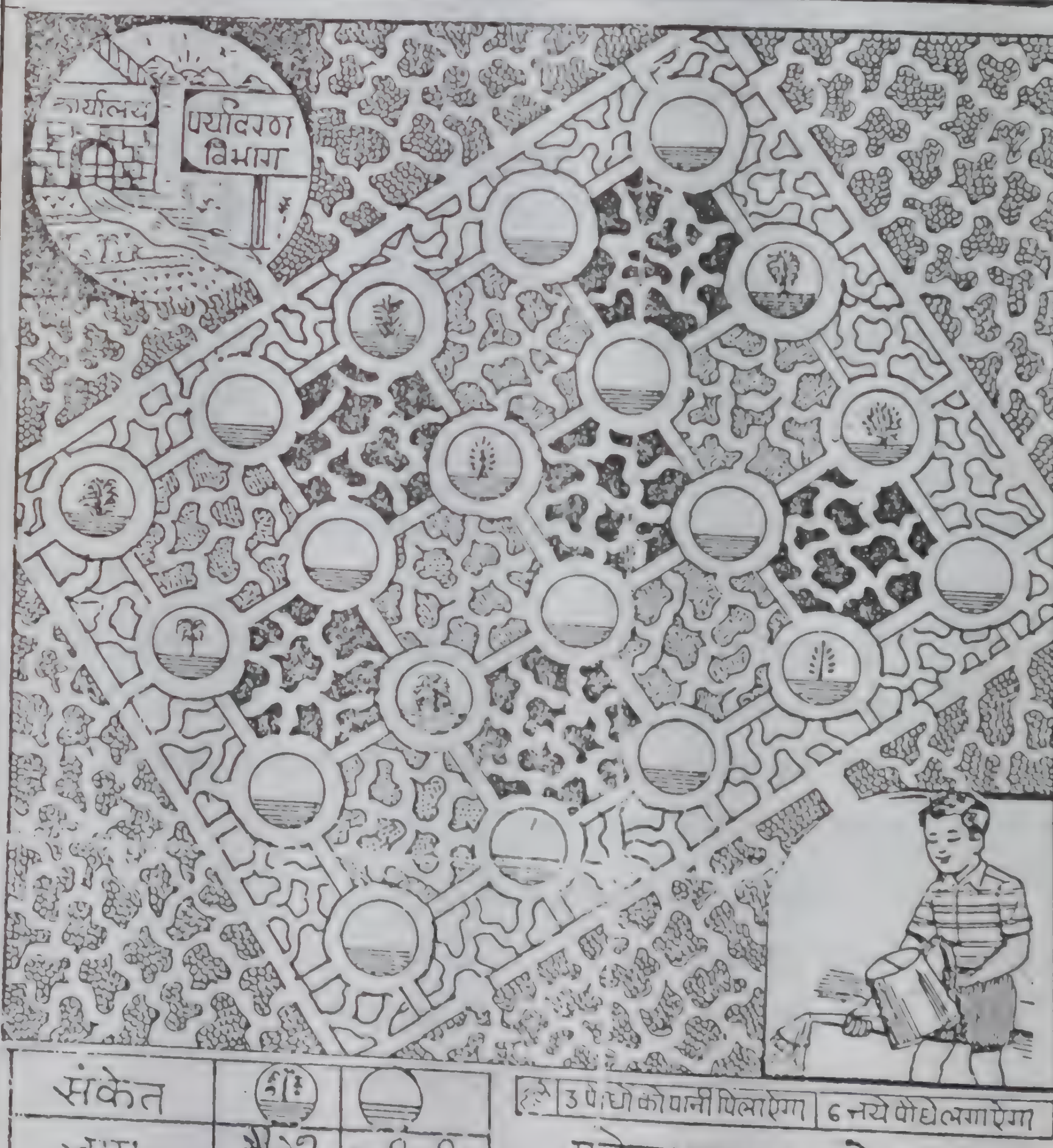
उत्तर : अपना आप।

पर्यावरण प्रश्नोत्तर पहेली

सुधीर को पर्यावरण विभाग के कार्यालय में पहुंचने के पश्चात नीचे दिये गये संकेतों के आधार पर निम्न प्रश्नों के उत्तर दीजिये :-

[1] वह कार्यालय पहुँचने तक कुल कितने पौधों को पानी पिलाएगा ?

[2] वह खाली जमीन में कितने नये पौधे लगाएगा ?



संकेत		
नाम	पौधे	खालीजमीन

3 पौधों को पानी पिलाएगा | 6 नये पौधे लगाएगा

राजेन्द्र कुमार बाड़मेरा, ब्यावर

विश्व का प्रथम

बधिर व्यक्तियों का टेलीफोन : मल्टीकोम स्क्रिप्ट

आपसे यदि कोई कहे कि बधिर व्यक्ति भी टेलीफोन पर बात कर सकते हैं तो आप विश्वास नहीं करेंगे, क्योंकि शायद आप इसे असंभव समझते होंगे। आपका सोचना ठीक ही है, लेकिन इस असम्भव कार्य को जर्मनी के वैज्ञानिकों ने सम्भव कर दिखाया है ।

जर्मनी के दूरसंचार संस्थान, बर्लिन के वैज्ञानिकों ने एक ऐसा कम्प्यूटराइज्ड टेलीफोन बनाया है जिसे बधिर व्यक्ति प्रयोग कर सकते हैं । इस टेलीफोन का नाम है— मल्टीकोम स्क्रिप्ट ।

मल्टीकोम स्क्रिप्ट में एक ही बोर्ड तथा एक स्क्रीन है और इन दोनों को एक तार के माध्यम से जोड़ दिया गया है । जब एक व्यक्ति किसी बधिर व्यक्ति को फोन करता है तो कम्प्यूटर के द्वारा मल्टीकोम की स्क्रीन पर फोन करने वाले व्यक्ति के शब्द उभर आते हैं, जिन्हें बधिर व्यक्ति सरलता से पढ़ सकता है। मल्टीकोम स्क्रिप्ट पर फोन करने से घण्टी नहीं बजती, बल्कि एक विशेष प्रकार की लाइट जल उठती है, जिससे बधिर व्यक्ति को मालूम हो जाता है कि कोई व्यक्ति उससे बात करना चाहता है । इसी तरह जब बधिर व्यक्ति किसी को फोन करता है और फोन इंगेज होता है तो भी एक विशेष प्रकार की लाइट जलती है, जिससे उसे यह मालूम हो जाता है कि फोन इंगेज है ।

मल्टीकोम स्क्रिप्ट टेलीफोन श्रवण शक्तिहीन विकलांगों के लिए एक अमूल्य वरदान है । यह टेलीफोन अभी परीक्षण काल में है । यदि यह अपने सभी परीक्षणों में सफल रहा तो सन् 1992 के आरम्भ तक इसका व्यवसायिक उत्पादन आरम्भ हो जायेगा । ■

धरती पर सबसे तेज भागने वाला जीव चीता है। जो 113 कि.मी. प्रतिघंटा की रफ्तार से भाग सकता है।

विश्व का प्रथम ब्रेल लिपि कम्प्यूटर : डेल्टा

वर्तमान युग को यदि कम्प्यूटर युग कहा जाये तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। रूस, अमेरिका, इंगलैंड, जर्मनी तथा जापान आदि देशों ने एक से एक विलक्षण कम्प्यूटर बनाये हैं। जापान तथा जर्मनी ने छोटे कमप्यूटरों की तकनीक का विकास किया है तो रूस, अमेरिका तथा इंगलैंड ने विशालकाय कम्प्यूटर बनाये हैं।

कम्प्यूटर के क्षेत्र में फ्रान्स भी किसी से पीछे नहीं है। फ्रांस में टौलाओज स्थित एक वैज्ञानिक शोध संस्थान 'हायर इलेक्ट्रो-टेक्नीकल एण्ड हाइड्रोलिक इंस्टीच्यूट' की 'लेंग्वेण एण्ड डाटाप्रोसेसिंग सिस्टम यूनिट के वैज्ञानिकों द्वारा नेत्रहीनों के लिये विशेष रूप से एक कम्प्यूटर तैयार किया गया है—डेल्टा। इस कम्प्यूटर में माइक्रोचिप और एक छोटे से कैमरे को इस प्रकार सैट किया गया है कि स्क्रीन पर ब्रेललिपि उभर आती है, जिसे नेत्रहीन सरलता से समझ सकते हैं। डेल्टा कम्प्यूटर में नेत्रहीन की उंगली जिस स्थान पर होती है, उसी स्थान पर कैमरे की सहायता से ब्रेललिपि को उभारा जाता है। इसके साथ ही उंगली के मार्ग निर्देशन के लिए एक छोटा सा यंत्र अलग से लगा रहता है। इसमें माइक्रोचिप की सहायता से शब्दों के ब्रेल लिपि में चित्रों के उभरने की गति एक सौ फ्रेम प्रति सेकेन्ड है, जिससे एक छात्र अपनी पढ़ने की क्षमता का अधिकतम गति से विकास कर सकता है। सर्वप्रथम फ्रान्स की सिस्टेलिक कम्पनी ने इसका व्यवसायिक उत्पादन आरम्भ किया। इसका वजन मात्र तीन किलो है, अतः इसे एक ब्रीफकेस में रखकर सरलता से कहीं भी ले जाया जा सकता है। डेल्टा में बारह बोल्ट की बैटरी का प्रयोग किया जाता है। एक बार बैटरी चार्ज करने के बाद यह आठ घंटे तक कार्य करता है। इसके बाद बैटरी को पुनः चार्ज करना पड़ता है।

■

चींटी अपने भार से 50 गुना ज्यादा वजन उठा लेती है यानि उसकी बराबरी के लिए साठ किलोग्राम वाले व्यक्ति को तीन हजार कि.ग्रा. भार उठाना पड़ेगा।

कविता : डॉ. भैरूलाल गर्ग

गुब्बारे



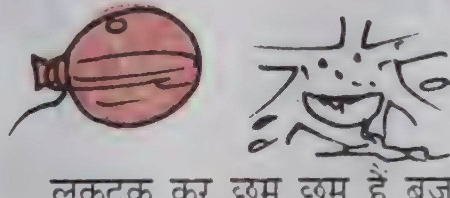
हरे गुलाबी नीले पीले,
गुब्बारे हैं रंग-रंगीले ।
गोल गोल कुछ मोटे मोटे,
कुछ लंबे कुछ छोटे छोटे ।

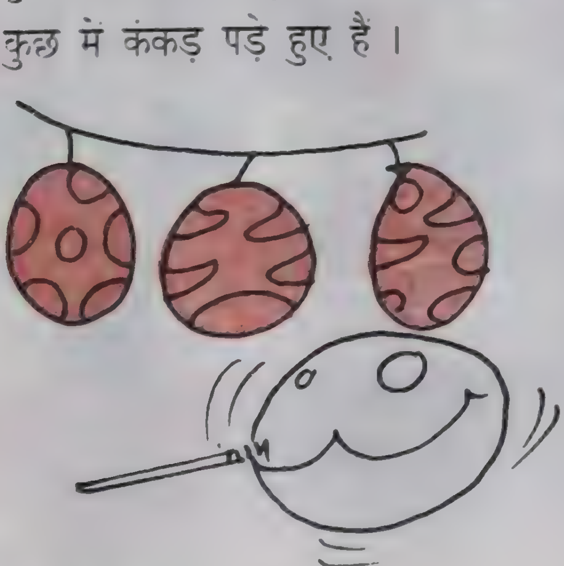


कुछ बैंगन कुछ भिंडी जैसे,
कुछ कद्दू कुछ टिंडे जैसे ।
कुछ चिड़िया कुछ बंदर भालू,
कुछ लौकी कुछ लगें कचालू ।



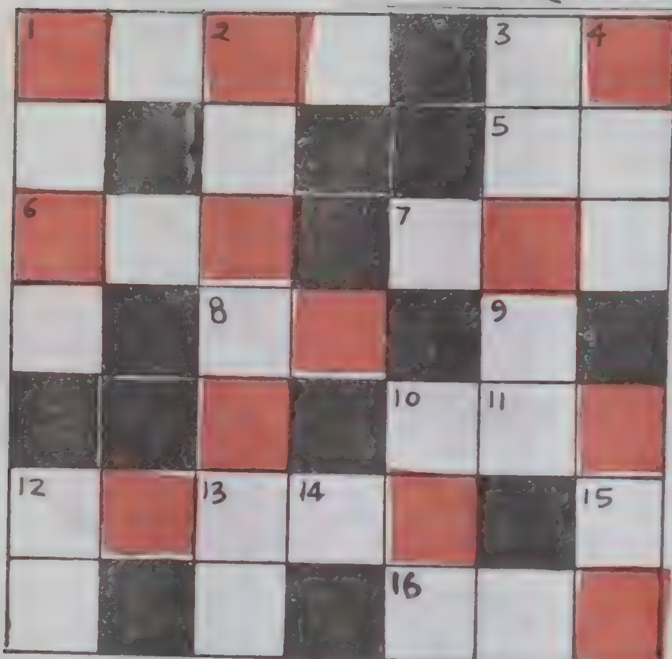
कुछ गुब्बारे बंशी वाले,
पीं पीं पों पों तान निकाले ।
कुछ पानी से भरे हुए हैं,
कुछ में कंकड़ पड़े हुए हैं ।





लकदक कर छम छम हैं बजते,
खूब सजावट में भी सजते ।
अजब अनोखे ये गुब्बारे,
लगते हैं बच्चों को प्यारे ।

वर्ग पहेली



❑ किशोर ओबराय
(टैगोर गार्डन, नई दिल्ली)

नीचे दिये गये संकेत शब्दों के आधार पर बाईं ओर दी गई वर्ग पहली को पूरी कीजिये। तथा नीचे दी गई उत्तर पहेली से मिलाईये और अपना ज्ञान परखिये।

संकेत

आड़े शब्द

1. शशक, खरहा
3. काक, एक पक्षी
5. मछली
6. घड़ियाल, एक जलजन्तु
   परन्तु, लेकिन
7. गीदड़
8. सांप
12. फूल पौधे लगाने का मिट्टी का पात्र
14. सिंह

खड़े शब्द

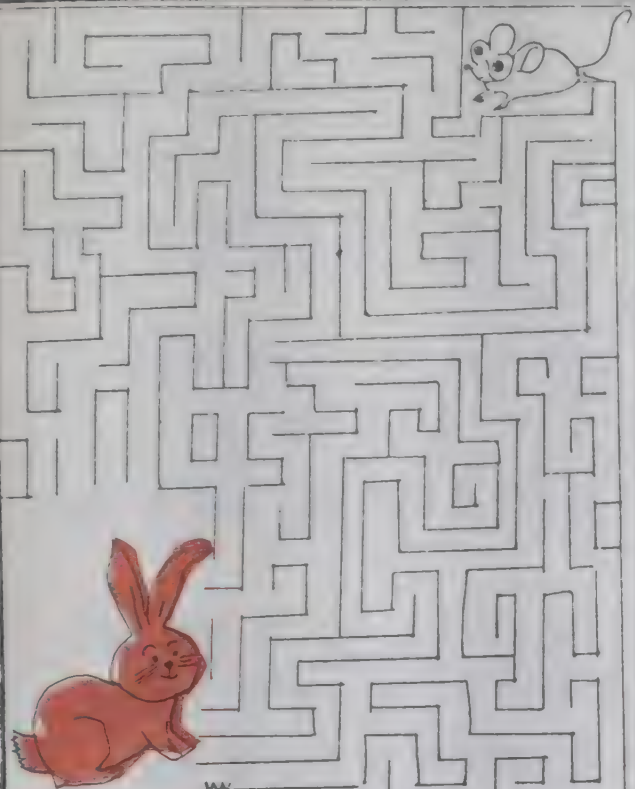
1. खट कीड़ा
2. गाय-भैंस का मल
3. जाती या वर्ग सम्बन्धी
4. बन्दर, कपि
8. नृत्य, क्रीड़ा
9. मूषक, मूसा
10. एक सुन्दर पक्षी, मयुर
11. गज
12. खर
13. सोटा, डंडा, लकड़ी
15. अश्व

उत्तर

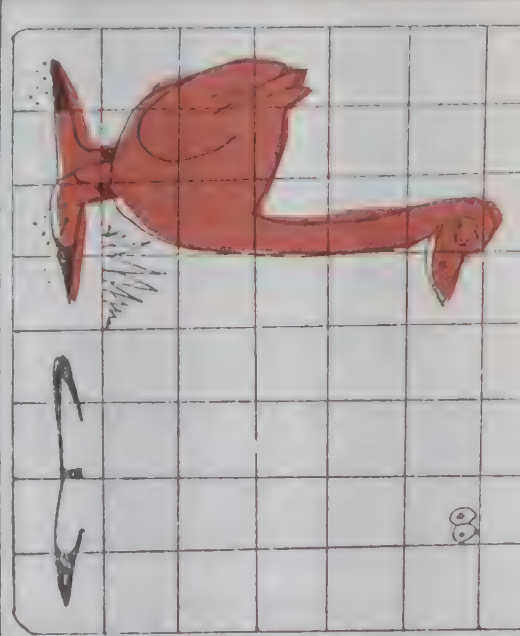
1 ख	र	2 गो	श		3 कौ	4 वा
ट		ब			5 मी	न
6 म	ग	र		7 सि	या	र
ल		8 ना	ग		9 चू	
		च		10 मो	11 हा	थी
12 ग	म	13 ला	14 शे	र		15 घो
घा		ठी		16 म	क	ड़ा



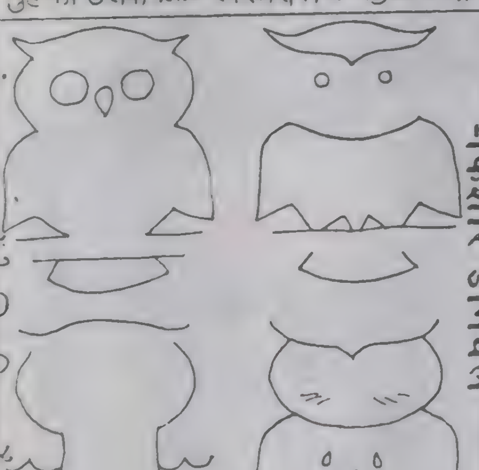
खेल का समय



शिशु चूहे को उसके मित्र खरगोश तक पहुंचाने का मार्ग बताओ



ग्राफ की सहायता से चित्र बनाना सीख



यहां चार उल्लुओं के चित्र दिए गए हैं। चारों ही अधूरे हैं। एक दूसरे को देखकर चित्र पूरा करें।

-किशोर डेनियल



मनोरंजक चित्र पहेलियां : सही उत्तर

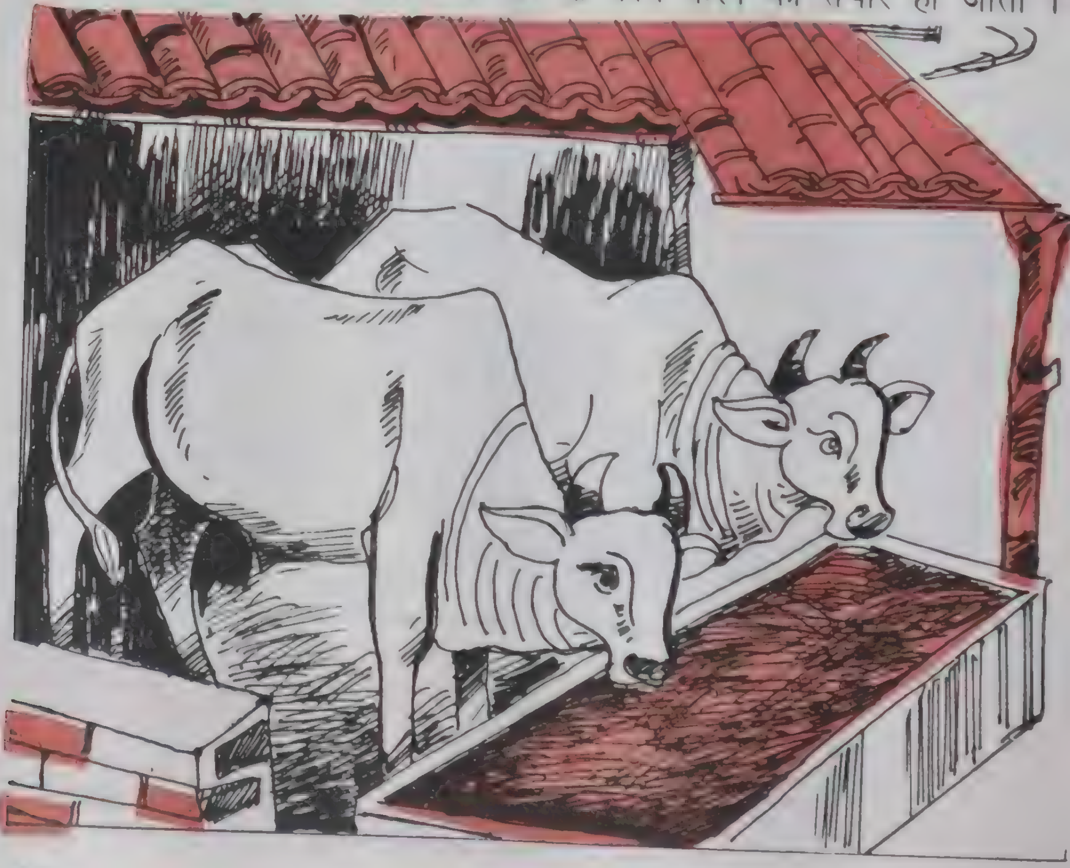
1. कुल 10 जिराफ हैं।
2. कान खरगोश के, मुंह जेबरे का, धड़ हिरण का, पैर हाथी के और पूंछ चीते की है

नंदू का बुखार

किसना के पास दो बैल थे। नंदू और मानू। मानू स्वभाव से जितना मेहनती और सहनशील था, नंदू उतना ही कामचोर और निकम्मा था। नंदू हमेशा काम से जी चुराता और मीठी नींद के सपने देखा करता जबकि मानू किसी भी काम को करने के लिये फटाफट तैयार हो जाता।

जब कभी नंदू काम न करने का बहाना करता, तो मानू उसे समझाते हुए कहता—देख नंदू, हमारा मालिक कितना दयालु है, हमें भरपूर खाना देता है, अधिक धूप में काम नहीं करवाता है। हर तरह से हमारा ध्यान रखता है, फिर भी तुम काम से जी क्यों चुराते हो ?

नंदू अंगड़ाई लेता हुआ कहता—क्या करूँ मानू, मुझे नींद बहुत आती है। वरना मैं कोई काम से जी थोड़े ही चुराता हूँ ! इस तरह नंदू बहानेबाजी किया करता। लेकिन मालिक के डर से काम करने को तैयार हो जाता।



कुछ दिनों बाद बारिश का मौसम आने वाला था । खेत की जुताई करनी थी । किसना जोर-शोर से तैयारी में जुट गया । वह बाजार से नया हल ले आया ।

नये हल को देखकर मानू को बहुत प्रसन्नता हुई, लेकिन नंदू के तो जैसे प्राण सूख रहे थे । वह बार-बार हल को देखकर चिढ़ रहा था । वह सोचने लगा, 'इस भयंकर गर्मी में दिनभर हल जोतना उफ! कितना बेकार काम है । मुझे तो बस हरे-भरे पेड़ की छाँव मिल जाये तो जी भरकर सोता रहूँ' । इस तरह वह कल्पना के जाल बुनता रहता ।

आखिर वो दिन भी आ गया । किसना जुताई के लिये खेत पर जाने लगा। उसने अपनी पत्नी को आवाज दी—राधा, मैं खेत पर जा रहा हूँ, बहुत काम है । जुताई करने में ही चार-पाँच दिन लग जायेंगे । मेरा खाना वहीं ले आना ।

नंदू खेत पर नहीं जाना चाहता था । उसने बुखार का बहाना किया, गर्दन लम्बी की और पैर पसारकर लेट गया ।

किसना ने जब उसकी यह हालत देखी तो उसे बहुत दुःख हुआ । उसे अपने सारे सपने टूटते हुए नजर आने लगे । वह 'धम्म' से नीचे बैठ गया और सोचने लगा—समय पर जुताई नहीं हुई तो क्या होगा ?







मानू से किसना की हालत देखी न गयी । उसने किसना को इशारा करके पास बुलाया और कहा—मालिक यह नंदू जुताई के नाम से डरकर बुखार का ढोंग कर रहा है ।

किसना ने कहा—अच्छा तो यह बात है । इसका कुछ न कुछ इलाज करना ही पड़ेगा । यह कहकर उसने मानू के कान में कुछ कहा । मानू ने स्वीकृति में गर्दन हिला दी । इस प्रकार उनकी योजना शुरु हुई ।

किसना ने नंदू के पास जाकर दुःख भरे स्वर में कहा—मेरे प्यारे नंदू, तुम्हें कितना तेज बुखार है। मैं तुम्हारे लिये बड़े से बड़ा डॉक्टर लाऊँगा और तुम्हारा इलाज करवाऊँगा। लेकिन तब तक तुम्हें शान्त जगह में बाँधना ठीक रहेगा। यह कहकर किसना ने उसे अंधेरे कोने में ले जाकर बाँध दिया। जहाँ से नंदू को सिवाय अंधेरे के कुछ दिखाई नहीं देता था।

फिर किसना ने राधा से ऊँची आवाज में कहा—राधा, सुबह जो तुमने पूरियाँ बनाई थीं जरा लाना तो, मानू को खिलानी हैं। और हाँ ! थोड़ा गुड़ का पानी और दलिया भी लेती आना। नंदू को कुछ मत देना उसे तेज बुखार है।

राधा बोली अभी लाई, यह कहकर वह झूठ-मूठ बर्तन बजाते हुए मानू को भोजन परोसने लगी।

इधर नंदू ने जब यह सुना तो उसके मुँह में पानी भर आया। मगर अफसोस, उसे कुछ नहीं मिलने वाला था। किसना सूखी घास ले आया और नंदू के सामने डालकर कहने लगा—मेरे प्यारे नंदू, तुम जल्दी से ठीक हो जाओ, फिर तुम्हें भी यह सब चीजें खाने को मिलेंगी तब तक इसी से काम चलाना होगा। भारी खाना तुम्हारे लिये ठीक नहीं। नंदू मन मसोसकर रह गया।

यह प्रक्रिया दो-तीन दिन तक चली। रोज नए-नए पकवान काल्पनिक रूप से मानू के सामने लाए जाने लगे। मानू भी चटखारे ले-लेकर खाने का नाटक करता।

इधर नंदू बुखार का ढोंग करके पछताता हुआ मानू की किस्मत को कोस रहा था कि इतने सारे पकवान मानू अकेला ही हड़प गया। मुझे पूछा तक नहीं। पर अब वह कहे तो किससे, कि वह नाटक कर रहा है।

एक दिन तो हद ही हो गई, राधा ने सचमुच गुलगुले निकाले। किसना के कहे अनुसार जान-बूझकर थाल भरकर नंदू के सामने ले गई। नंदू के मुँह में पानी भर आया। वह जैसे ही गुलगुलों की ओर बढ़ा, किसना दौड़ता हुआ आया और थाल राधा के हाथ से छिनते हुए बोला—ये क्या कर रही हो ! पागल हो गई हो !! जानती नहीं नंदू बीमार है। ऐसे में तेल की चीजें खिलाकर क्या उसे मार डालना चाहती हो। जाओ इन्हें मानू को खिला आओ।



यह देख नंदू के सब्र का बाँध टूट गया। वह किसना के पैरों में लेट गया और रोते हुए कहने लगा—मालिक मुझे क्षमा कर दो, मैंने जानबूझकर बुखार का नाटक किया, क्योंकि मैं काम से जी चुरा रहा था। मुझे गलती का अहसास हो गया है। मैं यह बात भूल गया था कि हमारा जन्म ही मेहनत करने के लिये हुआ है। आज के बाद मैं कभी काम से जी नहीं चुराऊँगा।

यह देख किसना का मन पिघल गया। उसने राधा से कहा—राधा, आधे गुलगुले नंदू के सामने रख दो। और वह मानू की तरफ देखकर मुस्करा उठा।

पहेलियाँ

- संग्रहकर्ता : अशविन्द्र कौर (लुधियाना)

1. नीचे फेंके ऊपर जाए,
   टकरा कर दीवार से आए।
   दौड़ा फिरता बिन पाँवों के,
   बच्चे भागे उसके पीछे।

2. मैं हूँ रंग बिरंगा सुन्दर,
   पूरब पश्चिम साथ मिलाता।
   वर्षा हटने पर ही नभ में,
   मैं हूँ अपने रंग दिखलाता।
   कभी सवेरे कभी शाम को,
   बच्चों मुझको देख सकोगे।
   रात पड़े मैं छिप जाऊँ,
   नहीं मिलूँगा तुम ढूँढ़ोगे।

उत्तर : 1. फुटबाल, 2. इन्द्रधनुष

बदलाव

नंदनवन का राजा था शमशेरसिंह। बड़ा घमण्डी व अत्याचारी। शिक्षा के नाम का घोर विरोधी। शिक्षा की लालसा रखने वाले को वह अपने राज्य में रहने भर भी न देता था। यही कारण था कि नंदनवन में कहीं कोई स्कूल आदि न थे। नंदनवासी शिक्षा को महत्त्व देते थे। वे चाहते थे कि उनके वन में ज्यादा से ज्यादा स्कूल हों ताकि वे ज्ञानोपार्जन कर सकें। मगर अपने इस अत्याचारी शासक के आगे कोई जुबान न खोल पाता। राजा के सामने स्कूल खोलने का जिक्र करके कोई जीव भी अपना नंदनवन छोड़ना नहीं चाहता था।

नंदनवन का ही निवासी डमरू सियार जागरूक नागरिक था। उसने अपने वन की प्रजा को शिक्षा दिलाने एवं राजा शमशेर सिंह को सबक सिखाने की सोच ली थी । एक दिन उसने अपनी इच्छा अपने परिवार को बताई व शिक्षोपार्जन हेतु पड़ौसी चंपकवन चला गया।

चंपकवन में काफी छानबीन करने के पश्चात् उसे अपनी ही बिरादरी का एक शिक्षक अमरू सियार मिला। काफी मिन्नतें कीं तब कहीं जाकर अमरू सियार डमरू को पढ़ाने हेतु राजी हुआ। डमरू अब गुरुदेव अमरू से पूरी लग्न से शिक्षा पाने लगा।

शीघ्र ही वह अपनी पूरी लग्न के कारण साक्षर हो गया। डमरू ने अब नंदनवन वापस जाने की सोची। लेकिन वह गुरुदेव अमरू को यह बात कह नहीं पा रहा था क्योंकि गुरुदेव से उसने शिक्षा शुरू करने से पहले एक वादा किया था कि वह तब तक नंदनवन नहीं जायेगा जब तक वह पूर्ण शिक्षित नहीं हो जाता। आखिरकार एक दिन डमरू ने गुरुदेव अमरू को अपनी आगे की योजना बताई व जाने की आज्ञा मांगी। योजना पर अमल करने पर गुरुदेव ने डमरू को नंदनवन जाने की मंजूरी दे दी ।

आज्ञा पाकर डमरू अपने सपने संजोते हुए नंदनवन चल पड़ा। नंदनवन पहुँच वह अपने परिवार से मिलकर खुश हुआ। डमरू ने अपने परिवार के लोगों

को इकट्ठा किया व उन्हें चोरी छिपे अक्षरज्ञान कराने लगा। लेकिन सच है दीवारों के भी कान होते हैं। किसी तरह राजा के पास यह खबर पहुँच गई। फिर क्या था? डमरू को बुलाया गया व सजा दे, वन से निकाल दिया गया। सजा पा डमरू चंपकवन चला गया। समय अपनी रफ्तार से बीतने लगा।

एक दिन नंदनवासियों को राजा शमशेर सिंह कुछ परेशान नजर आये। उन्होंने मिलकर राजा को परेशानी का कारण पूछा तो उन्हें मालूम हुआ कि पड़ौसी



मधुवन के शासक केसरी सिंह ने पत्रवाहक के माध्यम से एक पत्र भेजा है। पत्रवाहक पत्र देकर चला गया है। मंत्रियों से पत्र के विषय में पूछा तो कोई कुछ लिखा बताता है तो कोई कुछ। सच क्या माना जाए? कहना कठिन है। नंदनवन में कोई पढ़ा-लिखा है नही। अतः पत्र किससे पढ़वाया जाए। पत्रवाहक को भी पत्र पढ़कर सुनाने को कहा था लेकिन वह 'आप पढ़ें' कहकर चला गया था। किसी दूसरे वन में जाकर पत्र पढ़वाया जाए तो हो सकता है पत्र में कोई गुप्त

बात लिखी हो और वह उन्हें पता चल जाएगा। अब क्या किया जाए? यही सोच रहा हूँ।

डमरू सियार के बूढ़े पिता ने डमरू से चोरी छिपे कुछ अक्षर ज्ञान पा लिया था। अतः उसने राजा से आग्रह किया कि वह पत्र उसे दिखलाया जाए; हो सकता है कि वह कुछ पढ़ पाए। राजा ने फौरन वह पत्र मंगवाया। पत्र डमरू के पिता झबरू को दिया गया। झबरू ने आँख मटकाकर हकलाते हुए पत्र पढ़ना शुरू किया—

आदरणीय, शमशेर सिंह जी,

नमस्ते।



पत्र पढ़ने से पहले आपको बता दिया जाता है कि पत्र का उत्तर पाँच दिनों में दे दिया जाए वरना हम आक्रमण क़र देंगे। कारण ये हैं :—

इतना झबरू ने काफी प्रयास करके पढ़ दिया। अब उसकी आँखें जवाब दे गईं क्योंकि पत्र में नीचे छोटे-छोटे अक्षरों में कारण लिखा हुआ था जिसे वह पढ़ नहीं सकता था। अब क्या हो? सारे नंदनवनवासी घबरा गये। राजा शमशेर सिंह भी घबरा गये। उसके दिमाग से झबरू द्वारा पढ़कर सुनाये गये

ये शब्द टकरा रहे थे, ''पत्र पढ़ने से पहले आपको बता दिया जाता है कि पत्र का उत्तर पाँच दिनों में दे दिया जाए वरना हम आक्रमण कर देंगे। क्यों? किसलिए?

वह यह भी तो नहीं जान पा रहा था।

काश! वह डमरू को वन से न निकालता तो आज वह पत्र पढ़कर सुना देता। अकेला क्या वह सबको वह पत्र पढ़ने लायक बना देता। अच्छा ही हुआ वह थोड़े समय मे भी अपने पिता को तो कुछ सिखा गया जिससे हमें पता चल गया कि पत्र का उत्तर शीघ्र देना है। अगर यह झबरू भी कुछ सीखा न होता तो क्या होता? वह अपनी शिक्षा के प्रति बरती गई उदण्डता को सोचते-सोचते आत्मग्लानि से भर उठा।

अब आगे हाल किससे जाना जाए? अचानक किसी ने राजा को सलाह दी कि क्यों न डमरू को वापिस बुलवा लिया जाए। आखिर है तो वह एक नंदनवनवासी। राजा को भी यह विचार पसन्द आया। डमरू को लाने चंपकवन दूत भेज दिए गये।

दूतों को चंपकवन में डमरू गुरूदेव अमरू से शिक्षा पाता हुआ मिला। दूतों ने अपने आने का कारण डमरू को बतलाय। डमरू अपने निर्दयी राजा से बुलावा आया देख आश्चर्यचकित रह गया। उसने दूतों से पूरी जानकारी पाई तब कहीं उसे यथास्थिति का पता चला। डमरू की इच्छा पूरी होने का उचित समय आ चुका था। वह अपने गुरूदेव से आज्ञा ले पुनः नंदनवन की तरफ चल पड़ा।

नंदनवन में पहुँचते ही राजा शमशेर सिंह ने डमरू का स्वागत किया व अपने किये पर क्षमा मांगी। डमरू हंसते हुए बोला—क्षमा किस बात की राजन! अशिक्षा में तो यह होता ही है। अब सबसे पहले आप मुझे वह पत्र दिखलाइये। पढ़कर आपकी समस्या निबटा सकूँ फिर नंदनवन में आने के कसूर की क्षमा मांग सकूँ।

राजा अब और न सह पाये और बोल उठे—बस डमरू मुझे और शर्मिन्दा मत करो। मैं तुम्हारी पूरी बात समझ चुका हूँ। अब मैं पूरे नंदनवन में स्कूल खुलवाकर पढ़ाई शुरू करवाने में देर नहीं करूँगा। नंदनवन का हर प्राणी शिक्षित होगा। ये सुन सारे नंदनवासी खुशी से तालियाँ बजाने लगे। डमरू भी, राजा



में आये इस अचानक बदलाव को देख अपनी योजना पूरी होते देख फूला न समा रहा था।

थोड़ी देर बाद राजा ने वह पत्र डमरू को दिखलाया। डमरू ने पत्र पढ़कर राजा को सुनवाया। जिसमें लिखा था, ''हम नंदनवन की आधी भूमि चाहते हैं। हम चाहते हैं कि आप हमको अपना शासक मान आधी भूमि हमें सौंप दें व आप आधी भूमि पर राज करें। ऐसा न करने पर पूरे नंदनवन से हाथ धोना पड़ सकता है। क्या आपको यह मंजूर है? हाँ या नहीं । उत्तर उपयुक्त अवधि में दें नहीं तो युद्ध हेतु तैयार हो जायें।

आपका केसरी सिंह

राजा ने पत्र सुना तो उसका खून खौल उठा। उसने केसरी सिंह को बिना उत्तर दिए अपनी सेना को तैयार होने का हुक्म दे दिया। साथ-साथ में नंदनवन के निवासियों को भी सचेत रहकर मुकाबला करने की सलाह दे दी। नियत तिथि पर केसरी सिंह ने नंदनवन पर आक्रमण कर डाला। **(शेष पृष्ठ 38 पर)**

लेख : ऋषिमोहन श्रीवास्तव

चींटीखोर – चींटियों को खा जाता है

यह चींटीखोर अधिकतर गुआना तस्मानिया और आस्ट्रेलिया में पाया जाता है। इसे एकिड्ना भी कहते हैं। इसे 'चीटीखोर' इसीलिए कहते हैं कि यह चींटियों के बिलों में अपनी लम्बी-सी चोंच जैसी डालकर चींटियों को खा लेता है।

इसके शरीर की त्वचा नुकीले कांटों (स्पाइन्स) से ढ़की रहती हैं तथा नीचे साधारण बालों की एक परत होती है। इसके शरीर का अगला भाग लम्बा और शुंडाकार होता है। आँखें एकदम छोटी होती हैं बाह्य कर्ण भी नही होते। इसके पैरों के नाखून बहुत ही मजबूत और नुकीले होते हैं, जिन्हें यह चीटी के टीले या दीमक के घोंसले फोड़ने और बिल बनाने के लिए काम में लाता है।

चींटीखोर की जीभ लम्बी और बहि:सारी होती है, इस पर चिपचिपा-स्त्राव होता है जिससे यह चींटियों को पकड़ लेता है। इसकी पूंछ अल्प विकसित होती है। पैरों में पाँच-पाँच उंगलियाँ होती हैं। एंड़ी पर एक छोटा कंट होता है जो एक विशेष ग्रंथि से जुड़ा होता है।

चींटीखोर की मुख्य विशेषता यह है कि यह अधिकतर रात्रि मे ही बाहर निकलता है और बस खोज करने लगता है चींटियों के बिलों की। इसे चींटियाँ खाना विशेष प्रिय है।

(पृष्ठ 37 का शेष)

नंदनवन की सेना भी दो-दो हाथ करने को तैयार थी। डटकर मुकाबला हुआ। केसरी सिंह को मुंह की खानी पड़ी। अपनी विजय पर सब नंदनवासी प्रसन्न थे। खुशी के साथ-साथ राजा शमशेर सिंह कुछ गम्भीर भी था क्योंकि उसे आभास हो गया था कि अगर पत्र न पढ़ा जाता तो केसरी अचानक हमला बोल देता। तब हम हार भी सकते थे। शिक्षा के कारण ही हमारी जीत हुई। राजा अब गम्भीर हो गया। अभी नंदनवन में शिक्षा का प्रसार करने का उद्देश्य शेष और जो था।

बनो धरोहर



सच्चाई के पथ पर सदा
अहिंसा का पाठ पढ़ना,
कांटिले पथ पर सदा
निर्भय होकर बढ़ना,
जाति-धर्म का भेद सदा
अपने हाथों मिटाना,
राम-रहीम की ज्योति सदा
हर दिल में जलाना,
देश की मिट्टी की खातिर ।
खून का मोल चुकाना,
हरी भरी इस धरती में
पतझड़ न आने देना,
कह गए यह संत ऋषि मुनि
कह गए गांधी बुद्ध महावीर,
यह देश है तुम्हारा
धरोहर थे जिसके शहीद वीर,
रखना सदा अखंड इसे
कह गए लाल-जवाहर-नानक-कबीर,
ऊँचा रहे हिमालय सदा
लुटे न कभी कश्मीर ।

डॉ. अंकल के उत्तर

❑ डॉ. कुन्दन कुमार

— महेन्द्र कुमार (जयपुर)

प्रश्न : पेट में गैस बहुत बनती है। पेट में दर्द तो नहीं होता और न ही कब्ज रहती है। सिर्फ गैस बनती है। कृपया कोई घरेलू नुस्खा बताएं।

उत्तर : काला नमक व काली मिर्च बराबर भाग लेकर कूट-पीस कर शीशी में भरकर रख लें। चुटकी भर मात्रा में सुबह, दोपहर, शाम खाना खाने के बाद चाट लिया करें। लाभ होगा।

— निखिल कुमार (दिल्ली)

प्रश्न : डॉ. अंकल, टेलीविजन देखते समय व पढ़ते समय आँखों व सिर में दर्द होने लगता है। इसके साथ ही पेट दर्द भी रहता है। कृपया इलाज भी बताएं।

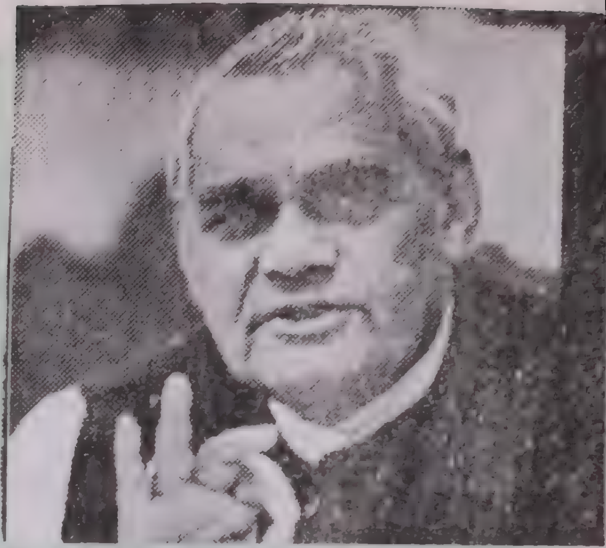
उत्तर : आप टेलीविजन कम से कम 15 फुट की दूरी से देखा करें तथा टेलीविजन देखते समय कमरे में अन्धेरा नहीं होना चाहिए । बल्ब या ट्यूब लाइट जलाकर रखें। इसके अलावा टेलीविजन के आगे ऐसा पर्दा या स्क्रीन लगाकर रखें जो टेलीविजन से निकलने वाली विकिरणों को रोकने में सहायक हो। विकिरण सीधी आँखों पर न पड़े। तथा एक चम्मच त्रिफला चूर्ण रात को दूध से सेवन करें । त्रिफला जल से आँखें धोयें। लाभ होगा।

— संजय (बीकानेर)

प्रश्न : मैं जब बोलता हूँ तो हकलाता हूँ। कृपया कोई उपाय बताएं।

उत्तर : यह मानसिक रोग है: हीन भावना से होता है। आप जिन शब्दों पर बोलते समय हकलाते है, एकान्त में बार-बार उन्हें बोलने का अभ्यास करें। अभ्यास से आप में आत्म-विश्वास आयेगा व किसी से बात करते समय पूर्ण विश्वास व निडरता से बोलें, इसके साथ ही पांच गिरी बादाम रात को दूध में भिगो कर रख दें। सुबह मक्खन व मिश्री मिलाकर पीसकर लें। लाभ होगा।

समाचार



अटल बिहारी वाजपेयी भारत के नये प्रधानमंत्री

प्रख्यात राजनेता व संवेदनशील कवि श्री अटल बिहारी बाजपेयी ने भारत के 16 वें प्रधानमंत्री के रूप मे पिछले दिनों शपथ ली। श्री वाजपेयी 'संयुक्त राष्ट्र संघ' में हिन्दी में भाषण देने वाले पहले भारतीय भी है । उन्होंने भारत के विदेशमंत्री सहित अनेक पदों को सुशोभित किया है।

मध्य प्रदेश के ग्वालियर में जन्मे 75 वर्षीय श्री अटल बिहारी वाजपेयी से देश की जनता को बहुत आशाएँ हैं ।

संगीतमय लॉलीपॉप

डेविड कैपर नामक एक लॉलीपॉप प्रेमी ने एक ऐसी लॉली पॉप की खोज की है। जिसमें संगीत लहरियाँ सुनाई देती है । इस लॉली पॉप की कार्यप्रणाली बेहद सरल है। लॉली पॉप का अगला भाग मुँह मे रखने के बाद हाथ की पकड़ में आने वाले हैण्डल का बटन दबाना होता है। इसके बाद कानों में स्वरलहरियाँ गूँजने लगती हैं। इस तकनीक का सबसे बड़ा कमाल यह है कि संगीत की स्वर लहरियाँ सिर्फ लॉली पॉप खाने वाले को ही सुनाई पड़ती है।

सातों चैनल पार करके रिकार्ड बनाने की ओर अग्रसर है रूपाली रेपाले

मुंबई की 16 वर्षीय रूपाली रेपाले ने पिछले दिनों न्यूजीलैंड का कुक जलडमरूमध्य तैरकर पार किया। वह पिछले 4 वर्षो में दुनिया के 6 जलडमरू तैर चुकी है। अब बस पनामा की खाड़ी को तैरकर पार करना शेष है। इसे पार करते ही वह दुनिया के सातों चैनल पार करने वाली दुनिया की पहली तैराक हो जाएगी।

इस साहसिक अभियान में उसके पायलट क्लाडज मैदान व पिता रामदास रेपाले ने उसे पूरी प्रेरणा दी। उन्होंने उसका पूरा साथ दिया और अपने आत्मबल व साहस के साथ रूपाली ने अपना यह अभियान पूरा किया। खराब मौसम व विपरीत परिस्थितियाँ उसे उसके ध्येय से डिगा नहीं सकीं।

एशिया का सबसे बड़ा सिनेमाघर

अमेरिका के वार्नर भाईयों ने, ताइवान की राजधानी ताइपे मे एशिया के सबसे बड़े सिनेमाघर का निर्माण किया है। इसमें 3400 लोग, चौबीसों घंटे, 17 फिल्में देख सकेंगे।

जर्मनी, इटली, स्विट्जरलैण्ड, ब्रिटेन और ऑस्ट्रेलिया में पहले ही ऐसे सिनेमाघर क्रियाशील हैं।

आवाज द्वारा डायल होने वाला टेलीफोन

जापान की तू सेल्यूलर कम्पनी ने 'विवावो' नामक एक ऐसा टेलीफोन विकसित किया है जिससे व्यक्ति बिना अपने हाथों का प्रयोग किये, केवल अपनी आवाज से डायल कर सकता है।

स्कूली छात्रों ने बनायी विकलांगों के लिए कार

राजस्थान के सरदार शहर नामक नगर के दुर्गा स्कूल के 11वी कक्षा के छात्रो सुमित बोथरा व कन्हैया लाल सोनी ने एक ऐसी कार बनायी है जिसे विकलांग भी चला सकते है। इस कार का नियंत्रण चालक अपनी सीट पर बैठे-बैठे करता है। चालक के सीट पर बैठते ही कार में इग्नीशियन होता है। इसके बाद चालक द्वारा हाथ या पैर से सामने बोर्ड पर लगा स्विच ऊपर करने से कार स्टार्ट होकर आगे चलने लगती है। यह स्विच अगर नीचे किया जाए तो कार रिवर्स गियर में आकर पीछे की ओर चलने लगेगी। इस कार का स्टीयरिंग सीट के साथ जुड़ा है। अगर कार को दायी ओर मोड़ना हो तो चालक बैठे-बैठे सीट को आवश्यकतानुसार दायीं ओर घुमाएगा और बायीं ओर मुड़ने के लिए बायीं ओर। कार रोकने के लिए चालक को अपनी सीट से थोड़ा उठना पड़ता है।

ये दोनो छात्र अपने विज्ञान अध्यापक श्री भजन लाल सोनी को अपना प्रेरणा स्त्रोत मानते हैं ।

सी. सुब्रह्मण्यम को 'भारत रत्न'

समर्पित गाँधीवादी और वयोवृद्ध राजनेता श्री सी. सुब्रह्मण्यम को पिछले दिनों देश के सर्वोच्च सम्मान 'भारत रत्न' देने की घोषणा की गयी है। केन्द्र सरकार ने महत्वपूर्ण पदों की जिम्मेदारी सम्भालने वाले श्री सुबह्मण्यम महाराष्ट्र के राज्यपाल रह चुके हैं। वे भारतीय विद्याभवन के भी पदाधिकारी हैं।

श्री सुब्रह्मण्यम स्वतन्त्रता संग्राम के दौरान अनेक बार जेल गये। वे 1948 में संविधान सभा के लिए निर्वाचित हुए और संविधान की रूप रेखा बनाने में उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

तेजी से उगने वाला धान

जापान के कृषि वैज्ञानिकों ने धान की ऐसी किस्म तैयार की है जो बोने के बाद 100 दिनों में पक कर तैयार हो जाती है जबकि सामान्यतः धान की फसल 160 दिन का समय लेती है।

उत्तरी जापान के एओमोराई प्रान्त में विशेष पर्यावरणीय परिस्थितियों में धान की यह किस्म विकसित की गयी है।

धान उगाने का यह प्रयोग उन संयुक्त अन्तर्राष्ट्रीय गतिविधियों में हिस्सा है जिनके तहत चाँद पर मानव बस्तियाँ बसायी जाएंगी।

— राम कुमार सेवक द्वारा

पढ़ो और हँसो

डॉक्टर ने अपने धनी मरीज को सलाह दी कि आपको प्रतिदिन सुबह कम से कम दो किलोमीटर की सैर जरूर करनी चाहिए तभी आपका स्वास्थ्य ठीक रह सकता है।

लेकिन डॉक्टर साहब, सैर शुरु करने में अभी कुछ दिन और लग जायेंगे, क्योंकि आजकल मेरी दोनों कारें खराब पड़ी हैं। मरीज ने अपनी परेशानी बताई।

— संतोष डेंगानी (वड़सा)

मरीज : डॉक्टर साहब, जब मैं सर्दी के बारे में सोचता हूँ तो मेरी कंपकपी छूटने लगती है।

डॉक्टर : तुम सोचो कि तुम्हारे सिर पर सूरज चमक रहा है।

(कुछ दिनों बाद)

मरीज : डॉक्टर साहब, आपने मुझे जैसा बताया था मैंने वैसा ही किया।

डॉक्टर : अब क्या परेशानी है?

मरीज : मुझे लू लग गई है।

× × ×

होटल में ठहरे एक व्यक्ति ने मैनेजर से शिकायत की कि आपका बैरा सुबह हजामत बनाने के लिए जो गर्म पानी दे गया था वह बहुत गंदला था।

मैनेजर ने बैरे को बुलाया और पूछा तो वह बोला, हुजूर मैं तो इन्हें चाय देकर गया था।

× × ×

हमारे ऑफिस के सारे कर्मचारी कम्प्यूटर की तरह काम करते हैं।

बहुत तेजी से काम करते होंगे।

नहीं, नहीं, बिजली जाते ही तुरन्त काम बंद कर देते हैं।

— ओमसिंह पंवार (भीम, उदयपुर)

बेटा : (माँ से) माँ थोड़ा चूरन दे दो मुझे खट्टी डकारें आ रही हैं।

माँ : बेटा थोड़ी सी चीनी खा ले। डकारें मीठी हो जाएंगी।

कंजूस सिपाही (पुत्र से) बेटा, मैं चाहता हूँ कि तुम बड़े होकर पुलिस बनो।

बेटा : मगर क्यों?

सिपाही : इसलिये कि मेरी खाकी वर्दी तुम्हारे काम आए।

— अंकित कुकरेजा (देसाईगंज (वड़सा)

पूनम : (पूजा से) कौन-सा फल सबसे ज्यादा होता है?

पूजा : परिक्षाफल (कड़वा और मीठा)

— आशीष चौधरी (दिल्ली)

एक व्यक्ति ने अपने दूध वाले से झल्लाकर कहा, तुममें और गाय में केवल यह अन्तर है कि गाय शुद्ध दूध देती है और तुम पानी मिलाकर देते हो।

दूध वाले ने उत्तर दिया, नहीं जनाब एक अन्तर और भी है मैं उधार देता हूँ। गाय उधार नहीं देती। वह पहले चारा खाती है फिर दूध देती है।

— डॉ. रामलखन प्रजापति (आजमगढ़)

कंडक्टर : सभी यात्री बैठ चुके हैं ड्राईवर से निवेदन है कि वह अपनी सीट ग्रहण करें।

यात्री : हाँ, नहीं तो कोई नेता उस खाली सीट पर बैठ जायेगा और उठने का नाम नहीं लेगा।

— सन्तोष कुमार बबेरवाल (गिदड़बाहा)

मालिक : भाई पहले बता दूँ मुझे एक जिम्मेदार नौकर की जरूरत है।

नौकर : साहब मैं बहुत जिम्मेदार हूँ इससे पहले मैंने जहाँ काम किया। गलती किसी की भी हो जिम्मेदार मैं ही ठहराया जाता था।

— सन्तोष कुमार, सिम्मी, सन्नी बबेरवाल (गिदड़बाहा)

भिखारी : साहब एक रुपये दे दीजिए।

आदमी : बस एक रुपया? ये लो दस रुपये।

फिर कुछ रुककर पूछा — तुम भिखारी कैसे बने?

भिखारी : मैं भी आपकी तरह एक की जगह दस खर्चता था ।

— राकेश (बालाघाट)

मार्च अंक रंग भरो प्रतियोगिता का परिणाम

प्रथम	:	अरविन्दर कौर 122/ 2 दूरदर्शन इन्कलेव खुरला खींगरा, जालन्धर (पंजाब)	आयु 12 वर्ष
द्वितीय	:	रूपाली सिल्ही भारत भूषण सिल्ही मु.-पोस्ट — मुकन्दपुर जिला : नवाँशहर	आयु 10 वर्ष
तृतीय	:	सरिता चौधरी 6/124 निरंकारी कालोनी दिल्ली-110009	आयु 12 वर्ष

इन बच्चों को हँसती दुनिया की ओर से पुरस्कार भेजा जा रहा है।

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्टियों को पसन्द किया गया वे हैं —

अखिल कुमार (निरंकारी कालोनी, दिल्ली), पूजा रानी (पुरानी सब्जी मण्डी, यमुना नगर), प्रेम सागर (नजफगढ़, नई दिल्ली), बबिता जगदीश गुप्ता (चेम्बूर, मुंबई),डफनी रिबेलो (अंधेरी, मुंबई), पूर्वा काठपाल (हिसार), श्वेता (बरोनी डेयोढ़ी, बेगूसराय), सुमीत गोयल (सिरसा), निशा फर्नेरिया (गुड़गाँव), सोनू बी. जायसवालस (ठाणे)

मई अंक की रंग भरो प्रतियोगिता

सामने के पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है । इस चित्र में सुन्दर-सुन्दर रंग भर कर 25 मई तक हँसती दुनिया कार्यालय में भेज दें । तीन सर्वश्रेष्ठ चित्रों पर पुरस्कार दिये जायेंगे।

पुरस्कारों की घोषणा हँसती दुनिया के जुलाई अंक मे की जायेगी । चित्र के नीचे दिये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पूरा पता,साफ-साफ अवश्य भरें। प्रतियोगिता में 15 वर्ष की आंयु तक के बच्चे ही हिस्सा ले सकते हैं ।

पुरस्कारों के विषय में 'सम्पादक, हँसती दुनिया' का फैसला अन्तिम और मान्य होगा ।

रंग भरो



नाम .... आयु ....

पूरा पता ....

....

....

आवश्यक सूचनाएं

हँसती दुनिया (मासिक) को आप घर बैठे ही मंगवा सकते हैं। इसका वार्षिक शुल्क मात्र 30/- रुपये है तथा आजीवन सदस्यता शुल्क 300/- रुपये हैं । यह शुल्क आप नीचे लिखे पते पर मनीआर्डर/चैक/ बैंक ड्राफ्ट/ पोस्टल आर्डर आदि द्वारा भेज सकते हैं —

सचिव,
(प्रकाशन विभाग)
सन्त निरंकारी मण्डल
सन्त निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009

नोट : चैक/ड्राफ्ट आदि सन्त निरंकारी मणडल के नाम दिल्ली में देय होने चाहिए।

- जब भी आपका पता बदले तो पता बदलवाने के लिए पुराना व नया दोनों पूरे पते साफ-साफ व स्पष्ट अक्षरों में लिखें। चिट संख्या भी देंगे तो सुविधा होगी।
- अगर आप पहले से ही पत्रिका के सदस्य हैं तो पत्रिका का बकाया चन्दा भेजते समय भी कृपया अपना चिट नम्बर अवश्य लिखें।
- जिस लिफाफे में आपको पत्रिका मिलती है उसके ऊपर जहाँ आपका पता लिखा होता है, वहीं पर शुरू में आपका चिट नं. भी छपा होता है, उसे कृपया नोट कर लें।
- यदि आपको पत्रिका न मिलने की सूचना देनी हो तो वह चिट नं. भी साथ लिख दिया करें। इससे कार्य में सरलता हो जाती है।

काला अक्षर भैंस बराबर



किस्सा चीन का है। उस जमाने में साफा आमतौर पर सिर्फ पढ़े-लिखे लोग ही पहनते थे।

एक बार आफन्ती अपने सिर पर एक मोटा सा साफा पहनकर राजदरबार की तरफ जा रहा था। आफन्ती के सिर पे साफा देखकर एक आदमी नम्रता से बोला—जनाब आलिब-फाजिल साहब, मेहरबानी करके मेरा यह खत तो पढ़ दीजिए।

आफन्ती ने मुँह बिचकाते हुए कहा—माफ करो भाई, मेरे लिए काला अक्षर भैंस बराबर है।

तकल्लुफ क्यों कर रहे हैं जनाब! जब आप इतना बड़ा साफा पहने हुए हैं तो यह कैसे मुमकिन है कि आप पढ़ना-लिखना नहीं जानते हो।

यह सुनकर आफन्ती हँस पड़ा। उसने फटाफट साफा उतारकर उस आदमी के सिर पर पहना दिया और बोला—बहुत अच्छा, अगर मेरे साफे में इतना दम है कि इसे पहनकर विद्या अपने आप आ जाएगी तो लो यह साफा तुम पहन लो और अपना खत खुद पढ़ लो। ●

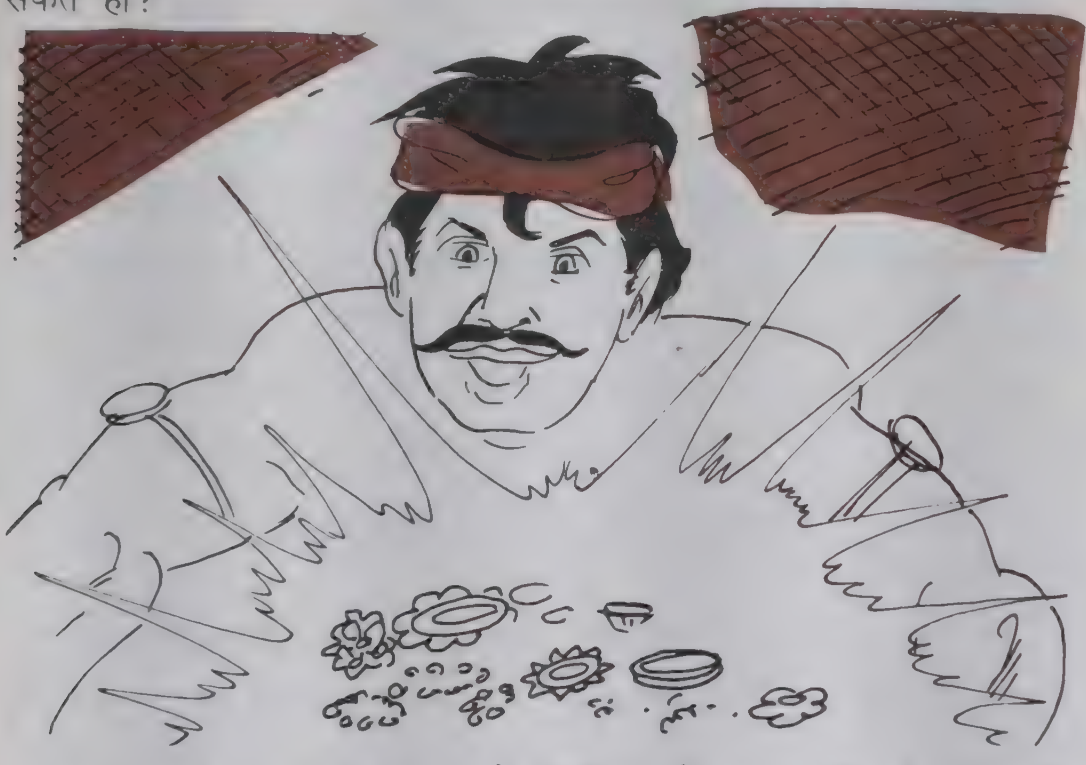
धन की रक्षा



माधोपुर गाँव में एक मछेरा रहता था। वह सूरज उगने से पहले ही मछलियाँ पकड़ने चला जाता और दिन भर मछलियाँ पकड़ने के बाद वह उसे बेच देता। इसी प्रकार वह अमना जीवन निर्वाह कर रहा था।

एक दिन वह प्रत्येक शाम की तरह नदी पर बैठा हुआ मछली पकड़ रहा था पर आज कोई भी मछली उसके कांटे में नहीं फंसी। इस कारण वह काफी चिन्तित था कि आज वह क्या बेचेगा? और खायेगा क्या? उसने बहुत प्रयत्न किया पर उसका हर प्रयत्न व्यर्थ हो रहा था। संध्या का समय था सूरज डूबने वाला था और उसकी चिन्तायें बढ़ती ही चली जा रहीं थीं। वह निराशा से वहाँ से उठा और आगे बढ़ गया। आज उसने किसका मुंह देखा था कि आज वह खाली झोला लेकर उदास मन अपने घर लौट रहा था।

वह अन्धेरी राह पर निराशा के भाव से दबा हुआ गुनगुनाते स्वर में गाता हुआ चला जा रहा था। अकस्मात् ही उसे ऐसा प्रतीत हुआ जैसे उसके समक्ष कोई चल रहा हो। पर उसे रात्रि में कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। वह अंधेरे में देखने की कोशिश करता पर अन्धकार में कुछ दिखाई न देता। पर उसे अनुभव हो रहा था कि उसके आगे कोई जा रहा है। वह भयभीत हो गया, एक तो वह भूख और प्यास से व्याकुल, दूसरा उसके समक्ष नई समस्या खड़ी हो गई। पर वह और कोई नहीं सफेद वस्त्र धारण किये हुए एक वृद्धा जा रही थी। वह धीमी गति से चल रही थी। उस वृद्धा ने धीरे से कहा—बेटा क्या तुम मेरी मदद कर सकते हो?



तब उसका डर जाता रहा। उसने निर्भीकता से कहा—हाँ, हाँ क्यों नहीं, मुझको बताओ। मैं यथाशक्ति तुम्हारी सहायता करूँगा। यह सुनकर वृद्धा और उसके पीछे-पीछे मछेरा चला जा रहा था। काफी आगे जाने पर वह वृद्धा एक झोपड़ी के आगे रुक गई और उसे कहा— आओ बेटा, अन्दर आ जाओ। मछेरा अन्दर चला गया।

वृद्धा ने तब उसको बताया—बेटा मैं एक बहुत गरीब विधवा हूँ। जब तक मेरे शरीर में शक्ति थी मैंने काम किया, कमाया और खाया, पर अब मेरे से

किसी भी तरह का कार्य नहीं हो पाता। सो मैं चाहती हूँ कि कोई मेरे पास रहकर मेरी सेवा करे।

मछेरा दयालु प्रवृत्ति का था। वह बोला—माँ तुम मेरी माँ के समान हो। यह मदद भी कोई मदद है? हाँ, मैं तुम्हारी सेवा करुँगा। जब तक तुम चाहोगी। इस प्रकार मछेरा वृद्धा की सेवा करता रहा और वृद्धा उससे प्रसन्न रहने लगी।

प्रत्येक दिन वृद्धा उससे कठिन से कठिन कार्य बताती। चूँकि वह मछेरा उस वृद्धा के साथ वादा कर चुका था इसलिए वह इन्कार भी नहीं कर सकता था। कभी वह वृद्धा उसे घने-घने जंगलों में जड़ी-बूटी लाने भेज देती। कभी कुछ खाने की मांग करती। असल में वह उसकी सहनशक्ति की परीक्षा ले रही थी। उधर मछेरा कुछ समय मछलियाँ पकड़ कर मारा करता और बाकी समय में वह उस वृद्धा का प्रत्येक कार्य किया करता था। एक-एक दिन करके काफी समय व्यतीत हो गया। वह यथासंभव वृद्धा की सेवा करता था निःस्वार्थ भाव से। अकस्मात् एक दिन उस मछेरे को, किसी आवश्यक कार्य से एक रात्रि बाहर काटनी पड़ी। उस रात्रि वह घर न लौट सका और दूसरी सुबह जब वह घर आया तो उसने झोंपड़ी में उस वृद्धा को न पाया। वह दूर-दूर तक उसको खोजता रहा। क्योंकि वह उसे अपने बच्चे से ज्यादा प्यार किया करती थी। वह भूखा-प्यासा जंगल में उसे ढूँढ़ता रहा और आवाज़ देता रहा। पर उस वृद्धा का कोई पता न चला।

वह भूख-प्यास से निढाल संध्या के समय घर पर आया और रोते हुए बोला—माँ तू कहाँ चली गई है, तू तो मेरी माँ के समान थी, एक ही रात को क्या हो गया?

अकस्मात् ही उसकी निगाह झोंपड़ी के एक कोने पर पड़ी चारपाई पर गई। उसे लगा जैसे उस चारपाई पर कुछ रखा हुआ हो। वह धीरे से चारपाई के समीप गया और चादर को ऊपर उठाया तो उसकी आँखें चौका चौंध हो गई। वहाँ तो कीमती हीरे जवाहरात और सोने-चाँदी के ढेर लगे हुए थे। आश्चर्य महान आश्चर्य से उनको निहारते ही रह गया वह। चारपाई के समीप ही उसे एक छोटा सा बंद लिफाफा नजर आया । उसने शीघ्र ही उस लिफाफे को खोला,

जिस पर सुनहरे शब्दों में लिख था—

बेटा,

मैं तुमसे अत्यन्त प्रसन्न थी । मैं कोई निर्धन विधवा नहीं थी, हाँ मैं विधवा जरूर थी, पर मेरे पास कोई संतान न थी । मेरे पास बहुत सा धन भी था, मेरे धन पर बहुत से लोगों की आँखें थीं, इस पैसे के लिये वे मेरी जान तक लेने को तैयार थे । मैं इस धन की रक्षा नहीं कर सकती थी क्योंकि मुझमें इतना बल नहीं था । मैं अपने पैसों को किसी अच्छे व्यक्ति पर लगाना चाहती थी । सो मैं निर्धन बुढ़िया का रूप धारण करके किसी ऐसे व्यक्ति की खोज में थी जो मेरे धन का सही उपयोग कर सके । इसी कारण मैंने तुम्हारी कठिन से कठिन परीक्षा ली । पर एक तुम ही ऐसे हो जो मेरी परीक्षा में पास हुए हो । तुमसे पहले मैंने बहुतों को अपना शिकार बना लिया जो मेरी परीक्षा में फेल हो गये। सो मेरी अन्तिम इच्छा यही है कि तुम मेरे इस धन का सही उपयोग करो, कैसे करना है यह तुम्हारी अपनी इच्छा पर निर्भर है। मैं कुछ पैसा लेकर तीर्थ यात्रा पर जा रही हूँ। आशा करती हूँ कि तुम मेरी अन्तिम इच्छा भी अवश्य पूरी करोगे ।

— तुम्हारी माँ

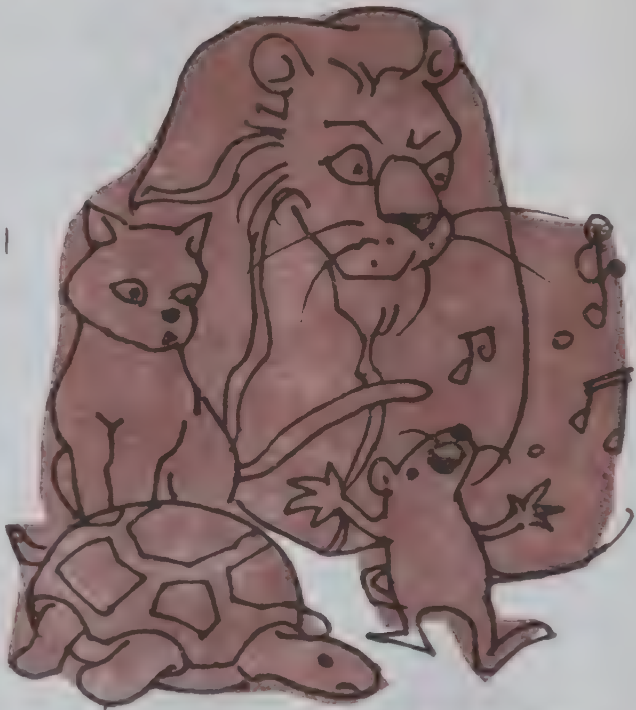
यह पढ़कर वह अत्याधिक प्रसन्न हुआ और सोचने लगा कि उस अमीर वृद्धा ने कैसे गरीबी के साथ सूखी रोटी खाकर उस के साथ समय व्यतीत किया। वृद्धा ने जैसे उससे आशा रखी थी उसने उसके धन का वैसे ही उपयोग किया। उसने जगह-जगह मठ बनवाये । जहाँ गरीबों को मुफ्त में रहने तथा खाने-पीने का कुछ भी न देना पड़ता । इन मठों में धर्म के काम हुआ करते थे ।

अब उसकी गरीबी समाप्त हो गई थी और बड़े सुख पूर्वक वह अपना जीवन व्यतीत कर रहा था । उसकी प्रशंसा दूर-दूर तक के गाँवों में फैल गई थी । लोग उसे भगवान के समान अहार दिया करते थे । यह पता है कि निःस्वार्थ भाव से सेवा करने का फल एक न एक दिन अवश्य ही मिलता है ।

कविता : नन्दरभान निरंकारी

बन्दर की बारात

बन्दर जी की चली बारात,
ढोल नगाड़े लेकर साथ ।
गीदड़ को था ढोल बजाना,
लेकिन उसकी लग गयी आँख ।
बिल्ली मौसी के गीतों पर,
चूहे मियां दिखाये नाच ।
चूहे जी कब मिले अकेले,
बिल्ली मौसी रही है ताक ।
लेकिन चूहा सोच के खुश,
कि राजा शेर है उसके साथ ।
और पोखर के तट पर बैठा,
कछुआ नन्द है बहुत उदास ।
चाल देख ढीली बन्दर ने,
डाली नहीं उसे जो घास ।



चलते-चलते दुल्हन के घर,
जा पहुँची सारी बारात ।
और फेरों के ऐन वक्त पर,
अकड़ गया दूल्हे का बाप ।
बोला बिना स्कूटर टी.वी.,
नहीं बने शादी की बात ।
विनती मिन्नत बेकार हो गयी
माना नहीं दुल्हे का बाप ।
जब कोई न पेश चली तो,
दुल्हन ने दिखलाये हाथ ।
उठते ही मंडप से बोली—
न लूँ फेरे इसके साथ ।
लुटे-पिटे से दूल्हे मियां,
लौटे ले बेरंग बारात ।



बुद्धिमान राजा

किसी गाँव में एक लड़का रहता था । उसका नाम 'राजा' था । वह बहुत बुद्धिमान था । वह अपनी माँ के साथ रहता था । राजा की माँ मेहनत मजदूरी कर अपने छोटे से परिवार का गुजारा चलाती थी ।

जब राजा बड़ा हुआ तो एक दिन उसकी माँ ने उससे कहा—''बेटा, अब तुम समझदार हो गये हो । इसलिये कोई काम-धन्धा करो ताकि आमदनी हो और मुझे थोड़ा सुख मिले...मेरे शरीर में अब बहुत कमज़ोरी आ गई है...मुझसे काम-काज ठीक से नहीं हो पाता है । लोग भी अब मुझे काम देने में आना-कानी करते हैं..कब तक उनकी फटकार सुनूँ...



''अम्मा...राजा ने माँ की पूरी बात सुनकर कहा—मैं कल से काम-धन्धा शुरू करने का इरादा रखता हूँ मुझे आशीर्वाद दो कि मैं सफल हो सकूँ ।

—ईश्वर तुम्हारा साक्षी है ।—उसकी माँ ने उसे आशीर्वाद दिया ।

—भगवान तुम्हारी मनोकामना पूर्ण करे...।

दूसरे दिन राजा घर से निकला । चलते-चलते वह नगर के पास पहुँचा । चारों ओर लोग आ-जा रहे थे । भांति-भांति की सवारियाँ सड़क पर दौड़ रहीं

थीं। बाज़ार की दुकानें तरह-तरह की थीं जो सामान से भरी पड़ी थी। हर ओर शोर था। आवाज़ें थीं। राजा देर तक सारा कुछ ध्यान से देखता रहा। कुछ देर बाद उसने कई दुकानदारों से काम के बारे में बात की। पर किसी ने भी उसको काम पर न लगाया। वह निराश सा हो उठा। घर को वापस होना चाहता था कि एक व्यक्ति उसके पास आया।

— क्या तुम काम करना चाहते हो? —

—जी हाँ, आप मुझे कुछ काम दे सकें तो आपकी बड़ी कृपा होगी।—

—तुम कैसा काम कर सकते हो?—



—आप मुझे कोई भी काम दे सकते हैं। मैं हर काम कर सकता हूँ। —राजा ने उसे बताया।

—ठीक है।— उस व्यक्ति ने राजा से कहा।

—यदि तुमने राजकुमार का मन जीत लिया तो समझो तुम्हारी नौकरी पक्की क्योंकि राजकुमार को एक समझदार नौकर की जरूरत है।

वह व्यक्ति राजा को लेकर दरबार में पहुँचा। उसने राजकुमार से कहा—यह लड़का आपके सवाल का जवाब देगा।

राजकुमार ने अपना सवाल राजा को सुनाया —



—स्वादिष्ट भोजन सामने लगा है । सारा सामान मौजूद है पर खाने वाले कुछ भी नहीं खा रहे हैं । दावत देने वाला हैरान है कि लोग खाते क्यों नहीं। उसने मेहमानों से पूछा—आप लोग खाते क्यों नहीं? कुछ कमी है क्या? क्या चीज कम है?

—माना आप सब सामान मंगवा सकते हैं । पर जो चीज होना जरूरी है वह कहाँ है? । मेहमानों ने पूछा ।

राजकुमार इतना कहकर ठहर गया। राजकुमार ने राजा से उस चीज का नाम पूछा जो मेहमानों को चाहिए थी । और उसका होना बहुत जरूरी था । उसके बिना खाना नहीं खाया जा सकता ।

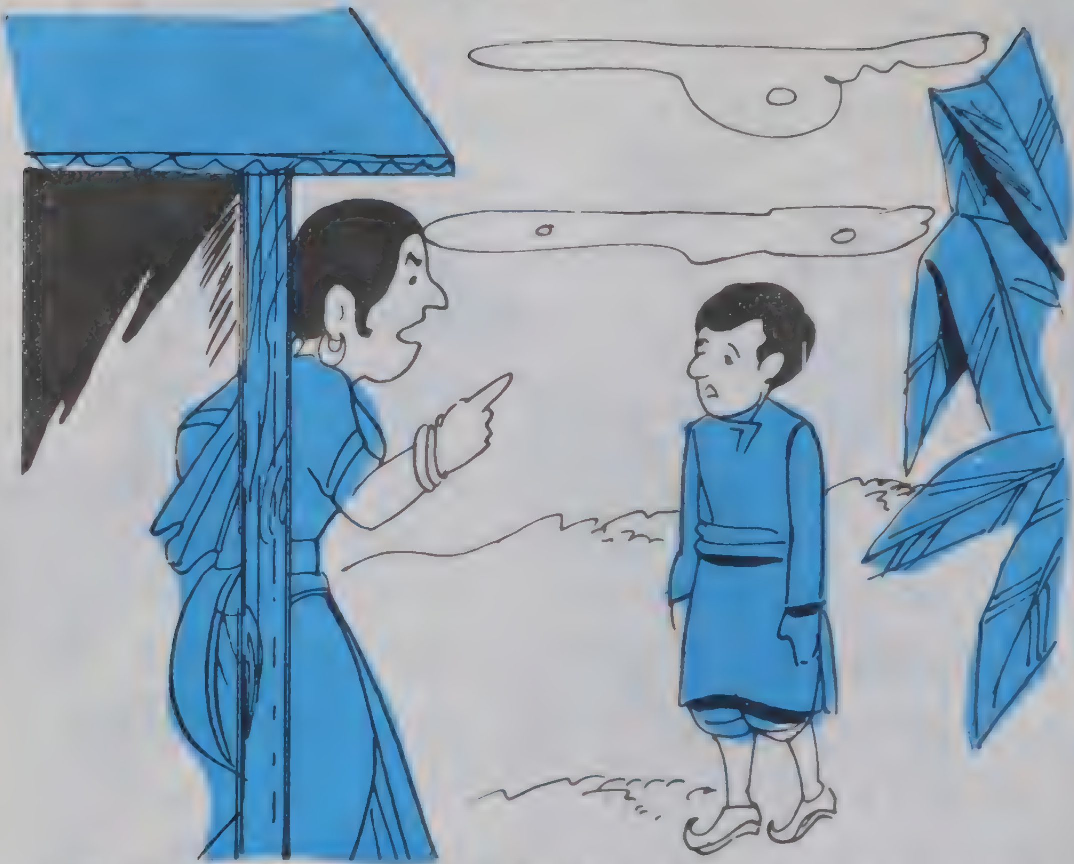
—जी, वह चीज़ है —भूख ।

—खूब...बहुत खूब... राजकुमार ने राजा को पास बुलाकर उसे गले से लगा लिया ।

—तुम काफी बुद्धिमान हो राजा...हमें ऐसे ही व्यक्ति की तलाश थी । राजकुमार ने उसे अपना सहयोगी नियुक्त कर लिया ।

—कहानी की सत्यता जो भी रही हो परन्तु यह सत्य है कि अक्ल का सम्बन्ध उम्र से बहुत अधिक नहीं होता तथा सदा जागते रहने वाले लोग अन्ततः विजयी होते हैं । ■

समर्थ



संदीप नवम् कक्षा में पढ़ता था। उसकी सौतेली माँ हमेशा उसे डांटती-डपटती रहती। उसकी एक छोटी बहन भी थी उपमा। वह अपनी माँ की तरह अपने भाई से अच्छा व्यवहार न करती।

उपमा सिलाई-कढ़ाई, चित्र बनाना इत्यादि जानती थी, पर बेचारा संदीप पढ़ाई में भी औसत रहता था। बस किसी तरह पास भर हो जाता था, धीरे-धीरे उसके अन्दर यह धारणा बैठती चली गई कि वह बेकार है उसका दिमाग सुस्त है; कुछ नहीं कर सकता। वह घर पर आए मेहमानों से भी कम बोलता। न उसे कोई बुलाए, न देखे, बस यही चाहता था, हमेशा अपने में ही मग्न रहता था।

एक बार दिनेश के घर में कोई धार्मिक कार्यक्रम आयोजित किया गया। मेहमान आये हुए थे। सबने अच्छे-अच्छे चमकदार कपड़े पहने हुए थे। परन्तु

दिनेश अपने चितपरिचित अंदाज में सबसे अलग-थलग पड़ा हुआ था।

—तू यहाँ क्या कर रहा है? अचानक माँ का स्वर गूंजा।

—क..क..कुछ नहीं।

....वो तेरा चेहरा ही बता रहा है।

कुछ करना है क्या—खड़े होते हुए संदीप ने कहा।

जा बाजार से पनीर लेकर आ, हलवाई को अब याद आया है—खीझ भरे स्वर में माँ बोली और उसे पैसे पकड़ा दिए।

वह बाजार चला गया। काफी जगह तलाश की, पर पनीर नहीं मिला। वह घर लौट आया माँ ने बोला, सारी दुकानों से पनीर बिक चुका है... बात पूरी



होने से पूर्व ही उसकी माँ जोर से बोलने लगी—तुझ मनहूस को भेजकर कोई काम सिरे नहीं चढ़ सकता। इतने बड़े बाजार में तुझे पनीर नहीं मिला, हाथ नचाते हुए वह बोले जा रही थी।

संदीप चुप। मेहमानों के सामने ऐसा बर्ताव—यह सोचकर उसका मन रोने को हुआ, परन्तु वह चुप रहा।

—अब यहीं खड़ा रहेगा। उपमा के साथ काम में हाथ बंटा—फिर जोर से बोली थी माँ।

—हाँ-हाँ जाता हूँ—कहकर वह तेजी से निकल गया।

उस दिन वह बहुत उदास रहा। अन्य लोग आनन्दपूर्वक हास-परिहास करते रहे परन्तु उसने अपने आपको काम में उलझाए रखा।

एक बार गर्मियों की छुट्टियों में वे लोग मंसूरी गए। वहाँ पर संदीप के ताऊ जी का परिवार रहता था। दो लड़कियाँ थी उनके पास। उनमें से एक का नाम था राधा। दो साल पूर्व खेल-खेल में ही राधा अपने दोनों हाथ झुलसा बैठी थी। बाएं हाथ का अंगूठा और दायें हाथ की केवल दो अंगुलियाँ कुछ बची रहीं। कुछ दिन तक तो वह मायूस रही, अपना जीवन उसे बोझ प्रतीत होने लगा



था। पर माँ-बाप ने उसे खूब प्रोत्साहित किया। उसे प्रेरणा देते रहे। फलस्वरूप वह उन्हीं दो हाथों से अभ्यास करती रही । इस निरंतर अभ्यास के परिणामस्वरूप पढ़ाई तो पढ़ाई वह अन्य कार्यों मे भी दक्ष होती चली गई। अब उसे किसी के सहारे की आवश्यकता नहीं थी । ताऊ जी उसके अन्दर उत्साह भरते रहे। इतना उत्साह कि आत्मविश्वास राधा की रग-रग में समा गया। वह भूल गई थी कि उसके साथ कोई हादसा हुआ था।

संदीप अपनी चचेरी बहन से बहुत प्रभावित हुआ। उसके कार्य कौशल को देखकर वह मन ही मन उसके जीवन की प्रशंसा करता। एक बार राधा कोई



चित्र बना रही थी। लाल रंग में थोड़ा पानी डालना चाहती थी, संदीप ने सोचा कि मै उसकी मदद कर दूं जैसे ही वह उठा, राधा ने उसे मना किया और स्वयं ही लाल रंग में पर्याप्त पानी मिला लिया। वह फिर चित्रकारी में मग्न हो गई। संदीप उसकी एकाग्रता को देखता रहा। कभी उसके चेहरे की ओर देखता कभी कार्य करते हाथों को। इन्हीं क्षणों में संदीप मानों किसी प्रेरणा रूपी सरिता में बह रहा हो। राधा की प्रत्येक क्रिया उसके अंदर प्रेरणा भरती जा रही थी। उसने सोचा—यदि राधा अपंग होते हुए भी समर्थ है, आत्मनिर्भर है तो वह क्यों बेकार में ही हीन ग्रंथि को पाले जा रहा है। राधा के गुण वह भी तो ले सकता है, उसके अंदर भी शक्ति है कुछ बनने की। जमाने में रहने की जोर-जोर से शब्द उसके दिमाग में बजने लगे, हाँ करूँगा मै भी मेहनत करूँगा, कुछ तो कहीं भी स्थान पाने के लिए। अपनी माँ और बहन को दिखा दूँगा कि मैं भी अपनी प्रतिभा।

वह यात्रा सचमुच संदीप के जीवन में मील का पत्थर साबित हुई। घर लौटते ही उसने अपने आपको बदल लिया। अपनी पढ़ाई को मेहनत और चाव से करने लगा।



हर कार्य सोच समझकर करने लगा—उसकी सौतेली माँ अभी भी उसे डाँटती रहती थी। पर वह धैर्य अपना चुका था। सुनहरे भविष्य की आशा में वह मस्त हो चुका था। जब-जब उसका दिल डांवाडोल होता वह राधा के बारे में सोचता। यही विचार उसे उत्साह से भर देता था। अ्त:उसने एक दिन अपनी कार्य-कौशलता से सिद्ध कर दिया कि वह भी समर्थ है।

क्या आप जानते हैं

संग्रहकर्ता : सतीश कुमार (पानीपत)

1. समाचार पत्र का आविष्कार 16वी सदी मे इटली के वेनिस शहर मे हुआ।
2. चन्द्रमा का एक दिन पृथ्वी के 14 दिन के बराबर है।
3. विश्व का सबसे लम्बा प्लेट फार्म खड़गपुर में है।
4. विश्व का सबसे बड़ा सिनेमा घर राक्सी न्यूयार्क मे है।
5. झीगा मछली के खून का रंग नीला होता है।
6. काली मैना प्रतिदिन 30 ग्राम कीड़े खाती है।
7. बाज की रफ्तार 270 कि.मी. प्रति घंटा है।
8. पक्षियो में सबसे अधिक उम्र गिद्ध की होती है।
9. बांस का पौधा 6 हफ्ते मे 60 फुट लम्बा या उच्चा जा सकता है।
10. हिमालय पर गैस नामक वृक्ष है, जिससे रात में प्रकाश निकलता है।
11. फ्रांस विश्व का एक मात्र देश है, जहाँ मच्छर नही पाए जाते।
12. स्पेन विश्व का एक मात्र ऐसा देश है, जहां कपड़े पर अखबार निकलता है।
13. अमरीका में पाये जाने वाले पक्षी नाइप की बोली बहुत सुन्दर है, पर स्वर कंठ नही पंख से निकलता है।

आपके पत्र मिले

हँसती दुनिया अंक फरवरी 98 देखा। इसकी सभी रचनायें रोचक और आकर्षक हैं। प्रो.प्री.आर.शुक्ल का लेख 'एक अनोखा टेलीफोन' विशेष रूप से पसंद आया। अभिनंदन ने भी 'कीवी' के संबंध में उपयोगी जानकारी दी है। इस अंक की कहानियों और कविताएँ बहुत अच्छी नहीं हैं। कृपया इन पर ध्यान दीजिये।

□ कुमार अभिषेक (भोपाल)

मैं हँसती दुनिया की पुरानी पाठिका हूँ। मुझे ये पत्रिका बहुत अच्छी लगती है। यह हमारा ज्ञान बढ़ाती है। इसमें सबसे पहले, कभी न भूलो, दादा के उत्तर, समाचार, पढ़ो और हँसो, डॉ. अंकल के उत्तर सभी स्तम्भ ज्ञानवर्धक होते हैं। मैं हँसती दुनिया का हर माह इंतजार करती हूँ।

□ मनजिंदर कौर (टांडा)

हम सारे परिवार के लोग हँसती दुनिया पत्रिका का इंतजार करते रहते हैं जिसमें कविताएँ, लेख, दादा के उत्तर, लेख तथा कहानियों अति रूचीकर लगती है तथा बड़े चाव से बच्चे पढ़ते हैं।

□ मुखी, रामकृपाल गुप्ता (प्रतापगढ़)

हँसती दुनिया नियमित मिलती है, इसका लाभ बच्चे, जवान, बुजुर्ग भी ले पा रहे हैं क्योंकि इसकी सामग्री विशेष बनाई जा रही है। आशा है दिनों-दिन इसकी मांग बढ़ेगी।

□ ओमसिंह (ब्यावर)

हँसती दुनिया का नया सदस्य हूँ। मैं इस पत्रिका का बेसब्री से इंतजार करता रहता हूँ क्योंकि इसमें दादा के उत्तर, डॉ. अंकल के उत्तर, पढ़ो और हँसो बहुत अच्छे लगते हैं ईश्वर से प्रार्थना है कि हँसती दुनिया नियमित आगे बढ़ती रहे।

□ शंकर कुकरेजा (दोंडाईया)

हँसती दुनिया का मैं पुराना पाठक हूँ। मुझे हँसती दुनिया में पढ़ो और हँसो, डॉ. अंकल के उत्तर, दादा के उत्तर, कविताएँ, कहानियाँ आदि अच्छे लगते हैं। एक महीने के बाद जब भी हँसती दुनिया आती है तो मैं अपनी नानी को खोलने नहीं देता। मेरी यह इच्छा रहती है कि मैं ही पहले उसे खोलकर पढ़ूँ। मेरी और मेरी नानी की तरफ से शुभकामनाएँ है कि हँसती दुनिया और आगे बढ़े।

□ उमादेवी, शरद अशोक अग्रवाल(रायपुर)

हँसती दुनिया के मात्र दो अंकों का अध्ययन करने के बाद मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि इतनी शानदार पत्रिका से इतने समय तक मैं अनभिज्ञ क्यों रहा? हँसती दुनिया का प्रत्येक अंक पठनीय, संग्रहणीय एवं सदाबहार लगता है। यह कभी पुरानापन समेटे नहीं मिलता। हँसती दुनिया के समस्त प्रबुद्ध लेखकों, कवियों के साथ-साथ इसके नियमित पाठक भी बधाई के पात्र हैं जो स्वच्छ मनोरंजन की परम्परा को आगे बढ़ा रहे हैं।

□ कमल नागपाल (खंडवा)

Registered with the Registrar of Newspaper
For India under RNI No. 25672/73

Delhi Postal Regd. No. DL-11198/98

Licence No. U(DN) 23/98
Licenced to Post
Without pre-payment

Posted at N.D. P.S.O.
Prescribed dates 21st & 22nd